ज्ञानामृत

मासिक

वर्ष 41, अंक 05, नवम्बर 2005, मूल्य 05.50

1. हैदराबाद- आंध्रप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री भ्राता चन्द्रबाबू नायडू तथा बहन नायडू जी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी । साथ में हैं ब्र.कु. मुन्नी बहन तथा अन्य । **2. ओ .आर.सी. (गुड़गाँव)-** मूल्यों द्वारा प्रशासन में उत्कृष्टता विषय पर आयोजित महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम भ्राता टी.एन.चतुर्वेदी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. महेन्द्र भाई, हिमाचल की ऊर्जा मंत्री बहन विद्या स्टोक्स, इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन के निदेशक भ्राता पी.एल.संजीव रेड्डी, सी.बी.आई. के पूर्व निदेशक एवं सलाहकार भ्राता डी.आर. कार्तिकेयन, बिरला कारपोरेशन के प्रबन्ध निदेशक भ्राता के.सी. मित्तल, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. मौरीन बहन तथा ब्र.कु. हरीश भाई।

1. कटक- प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन में मंच पर विराजमान हैं उड़ीसा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता एस.बी.राय, ब्र.कु. महेन्द्र भाई, न्यायाधीश भ्राता आई.एम. कुदुसी, भ्राता ए.के. पटनायक तथा ब्र.कु. कमलेश बहन । **2. गाँधीनगर-** गुजरात के महामहिम राज्यपाल भ्राता नवल किशोर शर्मा जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सरला बहन । **3. भुवनेश्वर-** उड़ीसा के महामहिम राज्यपाल भ्राता रामेश्वर ठाकुर व उनकी धर्मपत्नी बहन नर्मदा ठाकुर को ईश्वरीय निमंत्रण देती हुई ब्र.कु. लीना बहन । **4. बांसवाड़ा-** राजस्थान की मुख्यमंत्री बहन वसुंधरा राजे सिंधिया को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शान्ति बहन। **5. कुरुक्षेत्र-** हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता भूपेन्द्र सिंह हुड्डा को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सरोज बहन । **6. इन्दौर (कंचन बाग)-** सम्पूर्ण स्वास्थ्य हेतु नि:शुल्क सलाह केन्द्र का शुभारम्भ करते हुए डॉ. भ्राता दिलीप नलगे, क्षेत्रीय आयुक्त भ्राता अशोक दास, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई, नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. भ्राता एम.सी. नाहटा तथा ब्र.कु. अनीता बहन । **7. बैंगलोर सिटी-** कर्नाटक के मुख्यमंत्री भ्राता धर्मसिंह जी को शाल ओढ़ा कर सम्मानित करती हुई ब्र.कु. पद्मा बहन। **8. जयपुर-** सिरोही ज़िला पत्रकार संघ के अध्यक्ष ब्र.कु. अवतार भाई को मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता के लिए सम्मानित करते हुए राजस्थान उच्च न्यायालय के वरिष्ठ न्यायाधीश भ्राता ऋषि कुमार शर्मा जी ।

– संजय की कलम से

योग के लिए स्थिरमति होना ज़रूरी

योगाभ्यास में एक तो **बुद्धि की स्थिरता** का और दूसरे, मन की **एकाग्रता एवं तल्लीनता** का बहुत महत्त्व है। परन्तु यह समझने-योग्य है कि बुद्धि में स्थैर्य तभी होगा जब बुद्धि एकमत होगी और मन तथा बुद्धि में भी एकता होगी। हमारे कथन का भाव यह है कि यदि मनुष्य के मन्तव्य अथवा विश्वास स्थिर नहीं होंगे तो उसकी बुद्धि भी स्थिर नहीं होगी। अभी-अभी एक सिद्धान्त में निश्चय करके फिर दूसरे ही क्षण यदि मनुष्य वहाँ से हिल जाएगा तो उसे 'स्थिरमति' नहीं कहा जाएगा जबकि योगाभ्यास के लिए स्थिरमति होना ज़रूरी है। इसलिए गीता में कहा गया है कि 'निश्चयात्मा ही को योगाभ्यास में सफलता प्राप्त होती है, अत: मनुष्य को चाहिए कि वह अपने सभी संदेहों को मिटाकर 'गत संदेह:' होकर अपने विश्वास को टिकाऊ बनाए, तभी वह योग में टिक सकेगा। दूसरी बात यह है कि मन और बुद्धि में भी एकता होनी चाहिए। इस बात को स्पष्ट करने के लिए हम एक उदाहरण लेते हैं। यदि बुद्धि ने यह जान और मान लिया है कि आत्मा और शरीर अथवा पुरुष और प्रकृति दो अलग सत्ताएँ हैं और कि 'योग' आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ने का नाम है तो अब यदि वह व्यक्ति किसी मनुष्य या शास्त्र के कहने पर मन को प्रकृति की किसी चीज़ पर टिकाने का पुरुषार्थ करेगा तो उसका मन स्थिर नहीं हो सकेगा क्योंकि उसकी बुद्धि का विश्वास मन की क्रिया के विपरीत है। उसकी बुद्धि तो मानती है कि प्रकृति जड़ है और योग चेतन एवं आनन्द-स्वरूप परमात्मा से लगाना है और मन प्रकृति की वस्तु पर स्थिर होने का यत्न कर रहा है, दोनों का तालमेल न होने से योग के सच्चे आनन्द की प्राप्ति नहीं होगी। पुनश्च, यदि बुद्धि में 'आत्मा' और 'परमात्मा' का ज्ञान न हो तो भी मन को अपने पुरुषार्थ में बुद्धि का सहयोग नहीं मिलेगा बल्कि बुद्धि को छोड़कर ही मन को अपनी क्रिया करनी पड़ेगी।

आज अभ्यासियों की ऐसी ही अवस्था है। आज कुछ लोग तो अर्ध खुली आँखों से मन को नासिका के अग्र-भाग पर टिकाने का यत्न करते

शेष पृष्ठ 24 पर

अमृत-सूची

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	65/-	1,000-
वर्ल्ड रिन्युअल	65/-	1,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	600/-	6,000-
वर्ल्ड रिन्युअल	600/-	6,000/-

प्रिय पाठकगण,

मिट्टी के दीपक सम नश्वर शरीर में अविनाशी आत्म-ज्योति को ज्ञान-घृत से प्रकाशित करने के प्रतीक दीपावली पर्व की आप सबको कोटि-कोटि बधाइयाँ!

मूल्य मानव के गहने हैं

सम्पादकीय ....

कई बार हम कहते हैं कि वैसे तो मैं बहुत ईमानदार हूँ, पवित्र हूँ परन्तु परिस्थिति आने पर ईमानदारी, पवित्रता छूट गई, मैं उनको भूल गया। विचारणीय बात है कि जब समस्या आती है तो हमारा बाकी कुछ भी नहीं छूटता, खाना, पीना, सोना, सम्बन्ध निभाना बरकरार रहता है, छूटते हैं तो केवल मूल्य छूट जाते हैं। समस्या के बारे में इतना सोचते हैं कि समाधान करने वाली सकारात्मक बातों को दरकिनार कर लेते हैं। यह तो ऐसे ही हुआ कि बुखार नहीं था तब तो गोली पाकेट में थी, बुखार आते ही गोली छूट गई। इससे बुखार उतर नहीं सकेगा। इसी प्रकार, जो मूल्य परिस्थिति आने पर छोड़ दिए जाते हैं, वे वास्तव में आत्मा द्वारा स्वीकार किए हुए थे ही नहीं। जो बात स्वीकार कर ली जाती है, वह कभी छूट नहीं सकती। जिस माँ को माँ मान लिया, क्या कभी परिस्थिति आने पर हम उसे माँ मानने से मना कर सकते हैं? कभी नहीं। इसी प्रकार जिस पवित्रता को सर्व गुणों की जननी, सुख-शान्ति की माँ मान लिया, उस गुणदात्री माँ पवित्रता को, परिस्थिति के वश होकर माँ मानने से पीछे हट जाना कितना घातक है! पवित्रता को माँ नहीं मानेंगे तो अपवित्रता माँ बनने के लिए तैयार खड़ी है। वह माँ बनेगी तो दु:ख-अशान्ति रूपी सन्तान को साथ लाएगी।

सफलता का आधार दृढ़ता

कहा जाता है कि दृढ़ता ही सफलता की चाबी है। यदि अपने मूल्यों पर, उसूलों पर दृढ़ रहा जाए तो हमें परिस्थितियों के आगे झुकने की ज़रूरत नहीं, परिस्थितियाँ स्वयं हमारे आगे झुक जाएंगी। महात्मा गाँधी जी अपने जीवन में मूल्यों को बहुत महत्त्व देते थे। एक बार साधनहीन महात्मा गाँधी जी ने कोचरब (अहमदाबाद) में आश्रम खोला। उस समय दूधाभाई नाम के हरिजन का परिवार वहाँ रहने आ गया। जो भाई आश्रम को आर्थिक सहयोग देता था, वह हरिजन के आने से असन्तुष्ट था। गांधी जी के समतावादी दृष्टिकोण के आगे वह मौन तो रहा पर उसने आश्रम को आर्थिक सहयोग देना बन्द कर दिया। गांधी जी इससे विचलित नहीं हुए। समानता के मूलभूत मूल्य में उनकी दृढ़ आस्था और उनके आत्मविश्वास का परिणाम यह निकला कि अगले दिन प्रात:काल कोई अजनबी अपना परिचय दिए बिना ही गांधी जी के चरणों में दस हजार रुपये भेंट कर गया। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार स्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने भी इस विद्यालय के स्थापना काल में बड़ी-बड़ी आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक चुनौतियों का सामना मूल्यों में अपनी दृढ़ता के आधार पर सहजता से किया।

मूल्यनिष्ठ ही सशक्त है

मूल्यहीन बात जब लम्बे काल तक घसीटी जाए तो फिर उखड़ने में मुश्किल पैदा करती है। उस प्रचलित बात के प्रति विवेकहीन लोग गहरी आस्था पैदा कर लेते हैं। जब कोई उस मूल्यहीन, नुकसानकारक बात को उखाड़ने की कोशिश करता है तो वे उसके दुश्मन भी बन जाते हैं। परन्तु यह सत्यता है कि सारे शरीर में फैले रोग को एक छोटी-सी गोली खत्म कर देती है, अनाज के गोदाम में उत्पन्न अनगिनत कीड़ों को थोड़ा-सा रसायन समाप्त कर देता है, एक दीपक मीलों तक का अन्धकार हटा देता है, एक लाइट हाउस कई जहाजों को रास्ता दिखा देता है, एक अगरबत्ती सारे कमरे को खुशबू से भर देती है, उसी प्रकार किसी एक व्यक्ति की मूल्यों के प्रति दृढ़ता भी, हज़ारों सालों से स्थापित और सारे संसार में प्रचारित कुरीतियों, कुकृत्यों, कुकर्मों तथा कुत्सित भावनाओं को मिटा सकती है। क्योंकि अच्छाई थोड़ी होते भी शक्तिशाली होती है। बुराई भीड़ रूप में होते भी कमज़ोर होती है। अच्छाई कम मात्रा में होते भी बुराई पर भारी पड़ती है। इसलिए कहा जाता है –

लालन की नहीं बोरियाँ,
हँसा ने चलें पराँती।
सिंहन के लहड़ा नहीं,
साधु न चलें जमाती।।

अर्थात् लालों की बोरियाँ नहीं होती, हंस कभी पंक्तियों में नहीं चलते, शेरों के झुण्ड नहीं होते और साधु कभी जमात बनाकर नहीं चलते। पौराणिक कथाओं में दिखाते हैं कि पाण्डवों की संख्या कम होने पर भी वे असंख्य कौरवों पर भारी पड़े क्योंकि जिस आदमी में मूल्य होते हैं वह एक होते भी लाखों के बराबर हो जाता है। इसी प्रकार मूल्यों के बल से महात्मा गांधी शक्तिशाली (तथाकथित भौतिक ताकत से लैस) अंग्रेज कौम पर भारी पड़े। प्यारे ब्रह्मा बाबा भी, संसार और समाज में बह रहे शक्तिशाली विकारों और मूल्यहीनता के तूफान के विपरीत, मूल्यों की नाव के अकेले और प्रथम खेवनहार बने, पर आज उस नाव के चप्पूओं को सम्भालने वाले अनेक शक्तिशाली नाविक उससे जुड़ गए हैं।

भय और प्रलोभन से बचें

कहने का भाव यह है कि परिस्थितियों से डर कर मूल्यों को त्याग देना तो ऐसा ही है, जैसे कि अपने श्वासों को त्याग देना। क्या श्वासों को त्यागकर कोई जिन्दा रह सकता है? बिना सांस का व्यक्ति मुर्दा कहलाता है और बिना मूल्यों का व्यक्ति भी धरती पर भार समझा जाता है। भयभीत व्यक्ति अपनी प्राप्तियों से वंचित हो जाता है और प्रलोभन में फंसा व्यक्ति भी प्राप्तियों से वंचित हो जाता है। जो व्यक्ति मूल्यों का सहारा लेता है वह भय और प्रलोभन दोनों को मार भगाता है। एक कहानी में इसे दर्शाया गया है–एक सन्त एक सम्राट का अतिथि बना, वहीं तीन पिंजरे रखे थे। एक पिंजरे में एक चूहा था, उसके सामने सूखा मेवा पड़ा था। दूसरे में बिल्ली थी, उसके सामने मलाई भरा कटोरा था। तीसरे में बाज पक्षी था, उसके सामने ताजा मांस था। तीनों भूखे थे पर सामने रखे पदार्थों को खा नहीं रहे थे। सम्राट ने कारण जानना चाहा। सन्त ने कहा–राजन्! चूहा, बिल्ली से भयभीत है, बिल्ली, बाज पक्षी से डर रही है। बाज पक्षी को किसी का भय नहीं पर उसे प्रलोभन है कि पहले बिल्ली को खाऊँ या चूहे को। इस दुविधा में उसे अपने पिंजरे में रखा मांस दिखाई नहीं देता। यदि लम्बे समय तक इनकी यही स्थिति रही तो अन्तत: ये तीनों प्राणी तड़फ-तड़फ कर मर जाएंगे। यह कहानी आज के युग के बहुत से मनुष्यों की कहानी है।

मानवता मूल्यों पर खड़ी है

उपरोक्त कहानी के अनुसार जो व्यक्ति बिल्ली और चूहे की भांति, सुरक्षित होते भी अनागत भय का आह्वान करते हैं या बाज की तरह सामने की चीज़ को ठुकराकर लोभ वृत्ति से पराई चीज़ पर आंखें गड़ाते हैं, वे अन्तत: संसार से खाली हाथ चले जाते हैं। उनका भय (परिस्थितियों को कई गुणा बड़ा करके देखने की आदत के कारण) हर समय उनकी सांस को गले में अटकाए रखता है और उनका लोभ, हमेशा दूर की चीज़ों को पकड़ने की बाज दृष्टि से उन्हें भटकाए रखता है इसलिए पश्चाताप करते हुए, गर्दन झुकाकर, आँसू बहाते हुए वे खाली हाथ चले जाते हैं। वे मूल्यों से दूर, शान्ति से दूर, पुण्यों से दूर और अन्तत: भाग्य से दूर हो जाते हैं। मूल्य मानव के गहने हैं, उसकी सम्पत्ति और मान-शान हैं। उसकी इज़्ज़त और धर्म हैं। मूल्य उसकी प्राणवायु और सम्बन्ध हैं। जैसे टांगों पर शरीर टिका है इसी प्रकार मानवता मूल्यों पर खड़ी रहती है, मूल्यों के सहारे दौड़ती, विचरण करती है। मूल्य रूपी टांगों के अभाव में वह कहीं किसी कोने में निश्चल-सी होकर दुबक जाती है और मानवता के निश्चल होने पर दानवता चंचल और उच्छृंखल हो कर अपना जाल फैलाने लगती है।

आइये, अपने जीवन की उच्च धारणाओं से मानवता को धरती और आकाश का खुला आंगन दें। दानवता को दबाएँ और मानवता के मुकुट को ऊँचा करें। मूल्यों के मुक्त प्रवाह में समाज की अस्वस्थ बातों को प्रवाहित कर दें। आध्यात्मिक जीवन की आनन्द धरा पर मूल्यनिष्ठ समाज का महल बनाएँ।

– ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

❑

कर्म और भाग्य

-ब्रह्माकुमारी शीलू, आबू पर्वत

इस संसार रूपी कर्मक्षेत्र पर हम आत्माएं ज्यों ही शरीर में आती हैं त्यों ही कर्म करना शुरू कर देती हैं। श्वास लेना,चलना, खाना-पीना, इन्हें क्रियाएं कहते हैं। कर्म करना बुरी बात नहीं है परन्तु किस भावना और किस वृत्ति से हम कर्म करते हैं इसके फलस्वरूप कर्म का स्वरूप बदल जाता है। अगर भावना और वृत्ति श्रेष्ठ है तो कर्म भी श्रेष्ठ बन जाता है। अगर भावना बुरी है तो कर्म भी बुरा बन जाता है। अगर कोई व्यक्ति बाहर से मीठी बातें करता है लेकिन अंदर में द्वेष-ईर्ष्या और वैर रखता है तो उसका वह कर्म श्रेष्ठ नहीं कहलाएगा। अगर हम श्रेष्ठ भाग्य चाहते हैं तो हमारे कर्म श्रेष्ठ होने ही चाहिएँ। जैसा बीज बोएँगे वैसा ही फल मिलेगा। अमरूद का बीज बोएँगे तो अमरूद मिलेगा, अनार का बीज बोएँगे तो अनार मिलेगा। श्रेष्ठ भाग्य की प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ कर्म करना अनिवार्य है।

श्रेष्ठ भाग्य क्या है

तन-मन-धन-जन, इन चारों सुखों को प्राप्त करना ही श्रेष्ठ भाग्य है। तन निरोगी हो, मन में शांति हो, धन की कमी ना हो, जन अर्थात् समाज में सम्मान हो, ये चारों सुख मिलना ही श्रेष्ठ भाग्य है। इन चारों सुखों में से एक की भी कमी होगी तो कहने में आएगा कि भाग्य की कमी है। आज कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं कहेगा कि मुझे चारों चीजें प्राप्त हैं। हरेक के मुख से अप्राप्ति का वर्णन तो होता ही है। कोई तन से दुखी है, कोई धन से दुखी है तो कोई जन से दुखी है। इन चारों प्रकार के भाग्य को प्राप्त करने का आधार क्या है ? हम समझते हैं कि वर्तमान में हमें जो भी प्राप्तियां हैं वे हमारे भूतकाल के कारण हैं। आज हम तंदुरूस्त हैं तो भूतकाल में जरूर तन से किसी को सुख दिया है जिसके परिणामस्वरूप आज तन का सुख मिल रहा है। अगर मन की शांति है तो जरूर पूर्व जन्म में कइयों को मन की शांति दी है। धन का सुख भी पूर्वजन्म में अनेक आत्माओं को धन का सुख देने से प्राप्त हुआ है अर्थात् दान-पुण्य किया है इसलिए आज धन की कमी नहीं है। जैसे एक बच्चा जन्म लेता है और पिता उसके नाम पर करोड़ों की संपत्ति लिख देता है , अब उस बच्चे ने तो कोई कर्म नहीं किया लेकिन स्पष्ट है कि पूर्व जन्म में धन से सेवा की है इसलिए जन्म लेते ही इतनी बड़ी संपत्ति का मालिक बन गया, इसलिए हमारा भूतकाल ही हमारे वर्तमान का आधार है और भविष्य का आधार वर्तमान है। अगर मैं भविष्य अच्छा बनाना चाहती हूं तो वर्तमान में श्रेष्ठ कर्म करने होंगे। श्रेष्ठता केवल संकल्प में ना हो उसे कर्म में अवश्व लाएं। अगर हम किसी के बारे में अच्छा सोच रहे हैं तो उसे मन तक ही सीमित न रखें, उसका वर्णन अवश्य करें। अगर किसी की सेवा करने का संकल्प है तो वह कर्म में आना चाहिए तभी वह श्रेष्ठ कर्म कहलाएगा। कई सोचते हैं कि मेरे विचार तो अच्छे थे लेकिन यदि बोल और कर्म अच्छे नहीं हुए तो अच्छे विचारों का क्या फायदा ? कई लोग कहते हैं कि हम किसी का बुरा नहीं सोचते, बुरा नहीं करते लेकिन सवाल यह है कि बुरा नहीं करते तो अच्छा कितना करते हैं। साधारण संकल्प करना जैसे कि हम यहां गए, वहां गए, यह करना है, वह करना है, यह तो बहुत सहज बात है परंतु आत्म चिंतन हमने कितना किया, दूसरे लोगों के गुणों का चिंतन कितना किया, उनको मन-वचन-कर्म से कितना सुख दिया, यह भी देखना पड़ेगा। कर्म कूटने से और भाग्य को कोसने से कभी भी भाग्य अच्छा नहीं बनता। मान लीजिए कोई रोगी है और वह चिल्लाता है कि हाय ! मुझे रोगी तन क्यों मिला ? इसे कहते हैं कर्म कूटना

और भाग्य को कोसना। ऐसा कहने से कोई प्राप्ति होने वाली नहीं है। लेकिन मुझे जितना प्राप्त है उसे सफल करना है। आज सफल करूंगी तो कल भाग्य उज्ज्वल होगा। एक व्यक्ति के पास धन की कमी है, वह सोचता है कि दूसरों के पास टी.वी. है, फ्रिज है और सब साधन-सुविधाएं हैं, मेरे पास नहीं हैं। सिर्फ ऐसा सोचने से धन नहीं आएगा। या फिर दुराचार, भ्रष्टाचार, अनाचार से अनेकों को दुःख पहुंचाकर अगर धन कमाया जाए तो वह भी सुख नहीं देगा। क्योंकि कहा जाता है कि चोरी का धन मोरी में। अगर भविष्य के लिए ऊंचा पद पाना है तो जितना पास में है उसी का सदुपयोग करें। उस थोड़े से धन से ही अनेकों को सुख दें जिससे अनेक आत्माओं की दुआएं प्राप्त होंगी ओर वे दुआएं हमारे भाग्य को बढ़ाएंगी। पुरुषार्थ से ही भाग्य बनता है। इसलिए कर्मों को कूटें नहीं, भाग्य को कोसें नहीं बल्कि तन-मन-धन को सफल करते जायें, सेवा में लगाएं। अगर इनको ऐसे ही अपने पास रख लिया तो भाग्य नहीं बनेगा। कई लोग धन को लॉकर में रख लेते हैं, पेटियों में भर लेते हैं , ऐसा धन अल्पकाल की खुशी तो देता है लेकिन सदाकाल का जमा का खाता उससे नहीं बनता, साथ-साथ चोरी होने, आग लगने तथा सरकार द्वारा लेने का भी भय रहता है। संकल्पों में चिंता भरी रहती है तो कौन-सा सुख है, इसलिए जितना प्राप्त है उसे सफल करो। मान लीजिए तन रोगी है , उसमें बहुत ताकत नहीं है पर जितनी भी ताकत है उसे सफल तो करो। उसी प्रकार मन में अशान्ति लाने की बजाय शांति का चिंतन करो। शांति के प्रकंपन वातावरण में फैलाओ।

दूसरों से भेंट नहीं करो

औरों के भाग्य से अपनी भेंट नहीं करनी चाहिए। हरेक का भाग्य अपना-अपना है, हरेक का कर्म अपना-अपना है तो हम उनसे अपनी भेंट कैसे कर सकते हैं। किसी प्राप्ति में मैं आगे हूँ और किसी प्राप्ति में दूसरा आगे है। हम न किसी का भाग्य ले सकते हैं और न किसी को भाग्य दे सकते हैं। अगर पेट में दर्द है तो उसे कोई दूसरा भोग नहीं सकता। अगर दवाई भी लेनी है तो वह खुद को ही खानी पड़ती है , तभी दर्द खत्म होता है इसलिए सदा सोचो कि मेरा कर्म और मेरा भाग्य मेरे हाथ में है। कर्म को कोसने से भाग्य नहीं बनेगा, श्रेष्ठ कर्म करने से भाग्य बनेगा।

जिन कर्मों को करने से मन खाता हो, वे नहीं करने चाहिएं। मन क्यों खाता है क्योंकि आत्मा उनको स्वीकार नहीं करती। आत्मा शुद्ध और पवित्र बातें ही चाहती है। हरेक वस्तु अपने मूल स्वरूप की तरफ ही जाना चाहती है। जैसे जल को बहाएंगे तो वह नीचे की ओर ही जाएगा क्योंकि जल का स्त्रोत है सागर। आप अग्नि प्रज्वलित करेंगे तो वह ऊपर की ओर जाएगी क्योंकि उसका स्त्रोत है सूर्य। इसलिए मन में अशांति और अपवित्रता लाएंगे तो मन खाएगा जिससे खुशी खत्म हो जाएगी। सबसे पहले हमें प्रभु-पसंद बनना है , फिर लोक-पसंद और फिर मन-पसंद। इसके लिए मन के असली स्वरूप में स्थित होना है। इसके लिए शक्ति चाहिए और वह शक्ति तब आएगी जब सोचेंगे कि ईश्वर को पसंद क्या है। हम तो देह-अभिमान वश ऐसा भी पसंद कर लेंगे जो हमारे हित में नहीं है , जैसे किसी भी व्यसन में मनुष्य फंस जाता है तो सोचता है कि यह मुझे पसंद है और मैं जो चाहूं सो करूं लेकिन यह ना औरों को पसंद है ना आपके हित में है इसलिए ऐसा काम नहीं करना चाहिए। परमात्मा ने जो भी नियम हमें बनाकर दिए हैं उन पर चलकर ही हम प्रभु-पसंद बन सकते हैं। उसके बाद बनना है लोक-पसंद। हम केवल अपने लिए नहीं जी रहे हैं समाज के लिए जी रहे हैं। खुद के लिए जीना, यह स्वार्थ है। लेकिन समाज के

कल्याण के लिए जीना, यह परमार्थ है। समाज में भी कई लोग ऐसे होंगे जो हमारी अच्छी बातों को पसंद शायद न करें। भगवान तो कहते हैं कि अन्तर्मुखी बनो गुणवान बनो, गंभीर बनो, आत्म-चिंतन करो, हो सकता है कि समाज के कुछ लोगों को ये बातें पसंद ना आएं लेकिन कालांतर में वे भी इन बातों को मानेंगे क्योंकि जीवन की वास्तविकताएं ही जीवन की आवश्यकताएं हैं। कई लोग अच्छे कर्म करते हैं परंतु साथ में यह भी सोचते हैं कि पता नहीं अच्छे का फल अच्छा मिलेगा भी या नहीं लेकिन हमें यह सोचना है कि आज नहीं तो कल, इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में, अच्छे का फल अच्छा होता ही है। कई बीज ऐसे होते हैं जो बहुत समय के बाद फल देते हैं और कई बीज तुरंत फल देते हैं। साधारण व्यक्ति तुरंत फल की इच्छा रखता है लेकिन ज्ञानी तू आत्मा व्यक्ति जानता है कि मेरा कर्म संचित हो गया। मेरा कर्म कभी भी निष्फल नहीं जाएगा। फल देने वाला परमात्मा मेरा साथी है तो मेरे अच्छे कर्मों का फल अच्छा ना हो, यह कभी हो ही नहीं सकता। अत: भाग्य की रेखा खींचने का आधार है अच्छा कर्म, कर्म अच्छे तो फल अच्छा अवश्य होगा।

□□

सच्चा दीवा

– ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क (देहली)

अपने-अपने घर को रोशन करने चले हो,
पर्व दीपावली पे दीप जलाने चले हो;
अपने भीतर के मूल्यों को भी ज़रूर जगाना!
मिठाई दिलखुश खिलाने से पहले
माला इनकी ज़रूर पहनाना।
पहने मूल्यों की माला वो ही सच्चा हीरा है,
जगमगाती रोशनी मूल्यों वाली ही सच्चा दीवा है!!
इसकी-उसकी-अपन की भृकुटि में
चमकता पावनता का हीरा है।
वो ही सच्चा दीवा है!!
इधर भी-उधर भी-सर्वत्र ही,
बरसाता जो रहम दया का नीरा है;
विश्व-कल्याण, परोपकार हेतु जो नर जीता है,
समझता जो अखिल जग की पीड़ा है,
मस्तक पे उसके दस्तक परमपिता खुद देता है,
दुआओं से सबकी वो पलता-बढ़ता, जीता है,
वो ही सच्चा दीवा है।।
सहनशील, जागती ज्योत,
शक्ति सम्पन्न खुद चिराग दीवा है,
बाहर न भीतर रही न विकारों की कोई आग,
मिटा दिए संशय के जिसने जाले,
हटा दिए पचड़े के कचड़े वैर, द्वेष वाले;
टिकती लक्ष्मी उसी के घर, हृदय जिसका उजला है।
पूजन होता उसका, सुखद मूल्यनिष्ठ विहँसता है।।
नहीं मात्र आज की दीपावली, वह अमर अमृत पीता है,
वो खुद ही सच्चा दीवा है। ❋❋

□□

'पत्र' सम्पादक के नाम

प्रश्न – सर्चलाइट किसे कहते हैं, किसी भी स्थान पर सर्च लाइट डालकर ईश्वरीय सेवा करने की विधि क्या है?

– रमेश, रोहतक

उत्तर – शब्दकोष के अनुसार सर्चलाइट का अर्थ है– बिजली की बड़ी तेज रोशनी का लैम्प जिसका प्रयोग कर दूर की वस्तु स्पष्ट देखी जा सकती है परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से इस का अर्थ है शक्तिशाली आत्मा से निकलने वाले शक्तिशाली प्रकम्पन। इन शक्तिशाली प्रकम्पनों के बल से हम कितनी भी दूर स्थित आत्माओं को शान्ति और सुख की अनुभूति करा सकते हैं। उनके भावों को बदल सकते हैं, उनमें आध्यात्मिक अभिरुचियाँ पैदा कर सकते हैं, उनके दृष्टिकोण को सहयोगी और सकारात्मक बना सकते हैं। वर्तमान समय चल रहे ईश्वरीय कार्य का उन्हें साक्षात्कार करा सकते हैं परन्तु इसके लिए हमारी अपनी मनोभूमि बहुत एकाग्र, बहुत पवित्र, बहुत अनासक्त तथा ईश्वरीय प्रेम में बहुत लवलीन होनी चाहिए। शास्त्रों में गांधारी की दृष्टि की शक्ति का जो वर्णन है, वह इसी सर्चलाइट जैसी ऊँची अवस्था का वर्णन है। उस कहानी में तो स्थूल नेत्रों पर पट्टी दिखा दी है परन्तु है यह सूक्ष्म नेत्रों द्वारा कुछ भी बुरा या व्यर्थ न देखने की बात। लम्बे काल तक जब आत्मा, इन्द्रियों द्वारा न केवल बुरा वरन् व्यर्थ तक भी न देखने, सुनने, बोलने, छूने, खाने का प्रण निभाती है तो उसका मन सभी इन्द्रियों का राजा बन जाता है, वह ध्रुव एकाग्रता प्राप्त कर लेता है। परमात्मा पिता तथा विश्वकल्याण के संकल्पों के सिवाय अन्य कोई विचार उसमें उत्पन्न ही नहीं होता है। मास्टर सर्वशक्तिवान की स्थिति में स्थित वह हर संकल्प की सिद्धि को प्राप्त कर लेता है।

किसी भी स्थान पर ईश्वरीय सेवा को सफलता का जामा पहनाने के लिए, निमित्त बने भाई-बहनों की उपरोक्त प्रकार की आन्तरिक स्थिति होने पर आत्माएं स्वत: खिंची चली आती हैं। कहा जाता है कि फूल जब पूरा खिल जाता है तो भँवरों को निमन्त्रण नहीं देना पड़ता, वे स्वत: चले आते हैं। सर्चलाइट जैसी आन्तरिक स्थिति बनाना माना सर्व ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों के मकरन्द से भरा हुआ चेतन रूहानी फूल बनना। ऐसे चेतन रूहानी फूल की खुशबू स्वत: दूर-दूर तक बिखर जाती है और आत्माएं उसे माध्यम बनाकर ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार लेने दौड़ी-दौड़ी आने लगती हैं। ऐसी आत्मा निरन्तर अपनी कमियों की सर्च (खोज) में लगी रहती है और उनको भरती रहती है इसलिए वह औरों के लिए सर्चलाइट सिद्ध होती है।

सितम्बर, 2005 की ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने से मुझको एक लेख 'संगठन बिखेर देती है उपेक्षा' सबसे अधिक प्रिय व समयानुसार श्रेष्ठ लगा और महसूस हुआ कि कैसे परमात्मा पिता अपने बच्चों को भिन्न-भिन्न रूप से शिक्षा देते रहते हैं। मैंने अपने 15 वर्षों के ज्ञानी-योगी जीवन में अनेक प्रकार के उतार-चढ़ाव देखे हैं। जीरो को हीरो बनते देखा है। ज्ञानामृत के लेख न केवल दूसरों के वास्ते हैं बल्कि हम सब को भी लाभ लेना चाहिए तथा उसे जीवन में उतारना चाहिए ताकि हम सब परमात्मा पिता की इच्छाओं को पूरा कर सकें। सम्पादक भ्राता जी से मेरी विनम्र प्रार्थना है कि इस प्रकार के अनुभवयुक्त लेख अवश्य ही भविष्य में भी छापते रहेंगे।

– ब्रह्माकुमार प्रीतपाल, सहारनपुर

मैं सदा सुहागिन बन गई

–ब्रह्माकुमारी सुदेश, करनाल
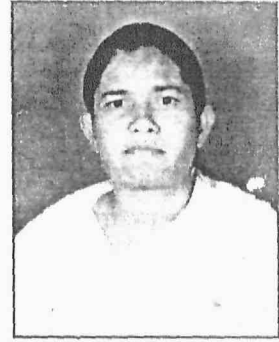
भारत में, कोई भी कन्या शादी के बाद जब ससुराल जाती है तो यह कहा जाता है कि लक्ष्मी आई है। एक समय था जब नारी सचमुच लक्ष्मी थी लेकिन आज तो यह शब्द कहने मात्र रह गया है। व्यवहारिक जीवन में न नारी में लक्ष्मी जैसे गुण रहे हैं और न ही ससुराल वाले लक्ष्मी की तरह उसे मान-इज्जत देते हैं परन्तु मेरे साथ जो कुछ घटित हुआ वह एकदम आश्चर्ययजनक था। जिस व्यक्ति से मेरी शादी हुई वह भक्ति-पूजा करने वाला व धार्मिक बातों में विश्वास रखने वाला था। शादी के तुरन्त बाद उसकी हरियाणा पुलिस में नौकरी लग गई और मेरी ससुराल में खेती-बाड़ी में भी बहुत वृद्धि हुई। इसे मेरे सौभाग्य का फल माना गया और सभी मुझे लक्ष्मी की तरह देखने लगे। मेरा मान-सम्मान इतना हो गया कि कोई भी मुझे किसी भी कार्य के लिए नहीं कहता था। मैं मन ही मन बहुत खुश रहती थी। परिवार वाले भी कहते थे कि यह बहू नहीं है, यह तो धन का भंडार है। कुछ दिनों बाद एक हंसता-खेलता बच्चा भी हमारे घर में आ गया। बाद में हम गांव छोड़कर शहर में मकान बनाकर रहने लगे। गांव में तो फिर भी कभी मैं कोई कार्य कर लेती थी परन्तु शहर आने के बाद तो युगल ने सब कार्यों के लिए नौकर रख लिया। अगर घर में कोई मेहमान आता तो उसे होटल में ही खाना खिला देते और मेरे लिए झूठ-मूठ कह देते कि उसकी तबियत ठीक नहीं है। लौकिक युगल ने लौकिक सुखों का मेरे लिए जैसे भंडार खोल दिया। मुझसे उसका इतना अगाध प्रेम था कि नौकरी के सब पैसे मेरे नाम से सावधि जमा खाते (Fixed Deposit) में डलवाता रहा और अपने नाम कभी कुछ भी नहीं रखा।

दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा

हम सबने यह कहावत सुनी है कि "चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात"। इस कलियुगी दुनिया में सुखों की चांदनी सदा नहीं रह सकती। मेरे युगल की हृदयाघात से अकाल मृत्यु हो गई। मेरी तो जैसे दुनिया ही लुट गई, दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। किसी भी लौकिक संबंधी से सुख की या आशा की किरण नज़र नहीं आई। मैं अपने को बिल्कुल अकेली,असहाय और निराश्रित समझने लगी। मुझे युगल के द्वारा जो सुख मिले थे वो स्मृतियों के रूप में सताने लगे। एक दिन मैंने सोचा कि ऐसे तो जिंदगी नहीं कटेगी। मैंने अपना ध्यान अपने इकलौते लड़के पर एकाग्र किया। इस कलियुगी दुनिया में अपनी इज़्ज़त बचाती हुई उसे ही सहारा समझ कर मैं दृढ़ता के साथ आगे बढ़ती गई। बेटे को भी मुझसे अगाध प्रेम था। मैं अपनी सारी उम्मीदों का सहारा बेटे को समझ जीवन यात्रा में आगे कदम बढ़ाने लगी। कभी-कभी जब मैं रोती थी तो बेटा कहता था कि माँ, मेरे जीते जी आप कोई चिंता न करें। मैं आपको कोई कष्ट नहीं होने दूंगा। कुछ समय बाद बेटे को पिता की जगह पुलिस में नौकरी मिल गई। वह नौकरी करते हुए दिन में कई बार मुझे फोन करता और कितना भी दूर होने पर भी रात को मेरे पास ज़रूर आ जाता। अपने अकेलेपन को भरने के लिए मैने लड़के की शादी कर दी। इतनी अच्छी बहू आई कि मुझे सब प्रकार का सुख देने लगी। मेरे उजड़े आंगन में पुन: खुशियाँ चहचहाने लगीं। बेटा अपनी पत्नी से भी ज्यादा मेरा ध्यान रखता था। नौकरी का सारा पैसा मेरे हाथ में रखता था। यहाँ तक कि 10 रुपये की भी ज़रूरत होती तो मेरे से ही लेता था।

जिन्दगी बनी बोझ

परंतु हर बहार के बाद पतझड़ का मौसम भी ज़रूर आता है, यह संसार का नियम है। मेरे जीवन का सहारा मेरा बच्चा भी इस पतझड़ की भेंट चढ़ गया। घर से नौकरी पर जाते समय रास्ते में घटी एक दुर्घटना में उसने मौके पर ही शरीर छोड़ दिया। दुनिया के जितने भी दु:ख हैं, मुझे लगा कि उनकी मुझ पर मुसलाधार बरसात होने लगी है। माली बनकर जिस सुंदर बगिया को लगाया, उसका एक-एक फूल उजड़ता हुआ देखती रही। कभी लोग मुझे लक्ष्मी और रानी कहते थे, अब वही लोग मुझे डायन कहने लगे। संबंधी मुझसे नफ़रत करने लगे, मानो कि मेरे दुश्मन बन गए। जिंदगी बोझ बन गई। सब मेरे धन को ललचाई नज़रों से देखने लगे। मेरी किसी को भी चिंता नहीं थी। लाड़-प्यार में पाली गई बहू के नाम, कई लाख रुपये और ज़मीन मैंने करा दी थी। लड़के की मृत्यु के केवल 30 दिन बाद ही वह मुझे अकेला छोड़, मेरे ही परिवार के एक अन्य घर की बहू बन गई। मुझे गहरा सदमा लगा। सिवाय मौत के मुझे कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। कई बार खुदकुशी करने की कोशिश की लेकिन बच गई। जब कुरुक्षेत्र में मैं धार्मिक स्नान के लिए गई तो,वहाँ डूबने का लक्ष्य लेकर मैंने गहरे पानी में छलांग लगा दी पर निकाल ली गई। जीवन अस्पताल में बीतने लगा। थोड़ी-थोड़ी देर में मुझे बेहोशी आने लगी। यह हादसा मेरी सहनशीलता से बाहर था। समझ में नहीं आता था कि क्या करूं और क्या न करूं। भगवान पर से भी मेरा विश्वास उठने लगा।

मुझे मिला अमर सुहाग

एक दिन रोते-रोते मैंने सोचा कि जब सब सो जाएंगे तो मैं मकान की दूसरी मंजिल पर से कूदकर अपने प्राण दे दूंगी। ऐसा सोचते-सोचते पांच मिनिट के लिए मुझे झपकी आ गई। झपकी में ही मुझे आवाज़ आई कि यहां से कूदने पर भी तुम्हारी मौत नहीं होगी, तुम ओम्शांति संस्था में चली जाओ, वहां तुमको शांति मिलेगी। ये शब्द सुनते ही मेरे अंदर एक गुप्त और अलौकिक शक्ति का संचार हो गया। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के बारे में मुझे कोई ज्ञान नहीं था। मेरे कहने पर मेरे लौकिक भाई ने आश्रम के बारे में जानकारी प्राप्त की। हमारे नजदीक ही ज्ञान में चलने वाली एक बहन रहती थी, उसके द्वारा मेरा ईश्वरीय ज्ञान से संपर्क हुआ। उस बहन की शुभकामना ने मुझे बहुत आगे बढ़ाया। ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा मुझे अहसास हुआ कि मैं देह से न्यारी चेतन आत्मा हूँ। मन, बुद्धि , संस्कार सहित हूँ , यह शरीर मेरा घर नहीं है। मैं तो चंद्र और तारागण से पार परमधाम से यहां पार्ट बजाने आई हूँ। मेरे असली पिता निराकार ज्योतिबिंदु स्वरूप परमपिता परमात्मा शिव हैं। स्थापना, विनाश और पालना उनके ही दिव्य कर्त्तव्य हैं। कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान भी मुझे मिला, मैं समझ गई कि हमें जीवन में जो कुछ भी प्राप्त होता है वह हमारे कर्मों का ही फल है। सृष्टि चक्र तथा 84 जन्मों की कहानी और युग परिवर्तन का सारा ज्ञान मेरी बुद्धि में समा गया। कहां तो भगवान से मेरा विश्वास ही उठ गया था और अब भगवान के प्रति मेरा दृष्टिकोण ही बदल गया। मैं समझ गई कि भगवान तो मेरे प्रिय पिता हैं, वे हमें कभी दु:ख नहीं देते। दु:ख तो हमारे ही कर्मों का फल है। कबीर जी ने भी कहा है –

करता था सो कर लिया,
अब करि क्यों पछतावे,
बोए पेड़ बबूल के तो
आम कहां से खावे।

इस प्रकार ईश्वरीय ज्ञान से मुझे कर्मों की गुह्य गति समझ में आ गई और मेरा नया जन्म हो गया। मैं ज्ञान-योग के मार्ग पर तीव्र गति से चलने लगी। परमात्मा पिता से बुद्धियोग जुट गया। सुंदर-सुंदर अलौकिक अनुभव होने लगे। जब-जब मैं ईश्वर पिता की याद में बैठती तो मन में इस प्रकार के संकल्प चलते, प्यारे बाबा, आपने मुझ अनाथ आत्मा को सनाथ बना दिया। आपने दु:खों से भरे मेरे मन

रूपी चमन में ज्ञान,गुण और अलौकिक प्रेम के फूल खिला दिये। बाबा, आप कितने महान हो, भाग्यविधाता हो। मुझ बेसहारा को आपने सहारा दे दिया। मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मैं आपसे सम्मुख मिलूंगी। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ। आपने मेरा जीवन बदल दिया। करनकरावनहार आप ही हैं। अब मुझे निमित्त बनाकर आप जो भी कराएंगे, मैं खुशी-खुशी करूंगी। अब मैं गमों की दुनिया से बाहर निकल आई हूँ और आपके साथ अतीन्द्रिय सुखों के झूले में झूल रही हूँ। **प्यारे बाबा, अब मैं विधवा नहीं हूँ। आप अमर सुहाग मुझे मिल गए। मैं सदा सुहागिन हो गई। आप पतियों के पति को पाने के बाद अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। आप ही मेरे कुल के दीपक भी हो। आपसे मेरे सर्व संबंध जुट गए हैं। अब तो दिल का यही संकल्प है कि मेरा श्वास, संकल्प, धन सब-कुछ आपकी श्रीमत अनुसार सफल हो। प्यारे बाबा, आपने अपनी गोदी में बिठाया, आपका कोटि-कोटि धन्यवाद।**

इस प्रकार से प्यारे बाबा ने मुझे जीने की नई आश दी और मुझे बहुत ही सुंदर सेवा के निमित्त बनाया। एक छोटे से कस्बे में बाबा ने मुझे निमित्त बनाकर एक आश्रम खुलवाया है। वह आश्रम प्यारे बाबा के नाम हो गया है। अनेक आत्माएं प्रतिदिन आकर भोलेनाथ शिवबाबा से अलौकिक संपत्ति की झोलियां भर-भर ले जाती हैं और यह देख-देख कर मैं निहाल होती रहती हूँ। यही सोचती हूँ कि प्यारे बाबा ने जैसे मेरे जीवन को सुखों से भर दिया है, वैसे ही सभी का जीवन सुखमय हो जाए। ❑❑

वाह ! प्रभु की छत्रछाया

–ब्रह्माकुमारी शीला देवी, पंचकुला

एक बार हम किसी कार्य से दूसरे शहर गए। सांय 7.30 बजे जब वापस आ रहे थे तो एक भयानक तूफान आया और एक भारी भरकम पेड़ हमारी गाड़ी पर आ गिरा। गाड़ी के सभी शीशे टूट कर चकनाचूर हो गए। मैं उस नुमाशाम के समय योग में थी। जब पेड़ गाड़ी पर गिरा तो मुझे महसूसता नहीं आई और न ही कोई आवाज सुनाई दी। बड़े आराम से हम सभी गाड़ी में बैठे रहे। प्यारे शिव बाबा हमारी रक्षा के लिए जैसे कि गाड़ी के साथ ही थे। बाबा ने उस पेड़ को गाड़ी की छत के ऊपर ही रोक दिया। प्यारे बाबा की छत्रछाया के कारण विपत्ति, छत पर से ही वापस लौट गई। हम तक नहीं पहुँची। गाड़ी के सारे शीशे टूट चुके थे पर हम में से किसी भी आत्मा के शरीर को चोट नहीं आई। जब ड्राईवर ने ब्रेक लगाया तो झटका लगा और योग से मेरा ध्यान टूट गया। तेज हवा की आवाज आ रही थी। हम सब ठीक–ठाक थे और गाड़ी टूट चुकी थी। देखने वाले सभी लोग कह रहे थे कि ईश्वर कहीं यहीं था जो इन लोगों को बचा लिया। मेरे मन से निकला, प्यारे बाबा, आप न होते तो हम भी न होते ! ऐसा हमारा भाग्य था। सचमुच प्यार से, दिल से याद करने के कारण परमात्मा पिता जैसे कि हमारे साथ ही थे। सृष्टि पर अवतरित भगवान की नज़र उन चेतन मणियों पर सदा रहती है जो प्यार से उसे याद करते हैं। प्यार से बाबा–बाबा कहते–कहते मेरी आँखें भर आईं और खुशी–खुशी हम अपने घर आ गए। ❑❑

दया और दुआ एड्स पीड़ितों पर

–ब्रह्माकुमारी जयश्री, विक्रोली (मुम्बई)

वैश्विकरण के कारण आज पूरी दुनिया ने एक गांव का रूप धारण कर लिया है। हर क्षेत्र में प्रगति तथा अधोगति दोनों तीव्र हो गई हैं। उन्नति के सिक्के का दूसरा पहलू उतना ही अधिक भयभीत करने वाला है। विज्ञान ने मानव को सफलता दिलाई है परन्तु नए-नए असाध्य रोगों का प्रकोप भी इस शतक में खूब बढ़ रहा है। विशेष रूप से एड्स की बीमारी ने तो सारे विश्व में सुनामी से भी ज्यादा कहर बरपाया हुआ है। इस बीमारी के प्रति लापरवाही या गुप्त रखने की प्रवृत्ति अब समाप्त करनी ही पड़ेगी। अध्ययनों से पता चलता है कि इसमें अच्छे चरित्र वाली महिलाओं की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। चिन्ता की बात यह है कि लगभग 75 प्रतिशत एड्स पीड़ित ऐसे हैं जिनमें , हास्पिटल में इन्जेक्शन के दौरान इस रोग के कीटाणु प्रवेश हो गए। कहने का भाव यह है कि श्रेष्ठ संस्कारों के लोग भी इसकी चपेट में आ जाते हैं। इनमें युवाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है।

हाल ही में एड्स पीड़ितों का एक स्नेह मिलन विक्रोली (मुम्बई) सेवाकेन्द्र के शान्तिवन में अयोजित किया गया। इसका आयोजन अपने आप में एक चुनौती था और इसके परिणाम बहुत कुछ सिखाने वाले निकले। संयोग से मेरा एक प्रोफेसर महिला से मिलना हुआ। उसकी वीणाधारा नाम की एक सहेली पिछले 15 वर्षों से एड्स पीड़ित है। लेकिन वह इस बीमारी से न भयभीत हुई है और न निराश। उसने समस्या का डटकर सामना किया है। पहली बहादुरी दिखाई समस्या को प्रत्यक्ष करने की। हर पीड़ित के लिए यह डर की बात है क्योंकि फिर समाज उसको अछूत की दृष्टि से देखने लगता है और उसे इतने अपमान का सामना करना पड़ता है कि वह जिन्दा होते भी पल-पल मृत्यु का अनुभव करता है। वीणाधारा बहन ने अपने जैसी अनेक महिलाओं तथा बच्चों को हिम्मत दिलाने का तथा समाज में जागृति लाने का कार्य शुरू किया। उसकी बहादुरी देखकर महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम भ्राता कृष्णाजी ने इनको कर्नाटक से मुम्बई में, मेहमान के रूप में अपने राजभवन में आमान्त्रित किया और पत्रकार सम्मेलन में उसको पेश किया ताकि अनेक लोग उससे प्रेरणां ले सकें। वीणाधारा बहन ने जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण,जीवन शैली में परिवर्तन,नियमित दवाइयाँ, सात्त्विक आहार आदि का जिक्र किया। यह सब जानकर मुझे भी प्रेरणा मिली। मैंने राजयोग का प्रयोग इन लोगों पर करने की योजना बनाई क्योंकि इन रोगियों को मनोबल तथा रूहानी स्नेह की अधिक आवश्यकता है। यह स्पष्ट होने के बाद एक प्रयोग किया गया।

हमें महात्मा गांधी, मदर टेरेसा, बाबा आमटे जैसे महान व्यक्तियों की याद आई। प्यारे ब्रह्मा बाबा ने भी अनेक ब्रह्मावत्सों की जो शारीरिक, मानसिक, आत्मिक सेवा की, वह भी आँखों के सामने आई। हमने सोचा कि इन सबने महारोगियों के जख्म सहलाए, अपने अंग-संग रखा तो हम भी जितना हो सकता है अवश्य करें। ब्रह्माकुमारी माधवी बहन, प्रोफेसर ललिता धारा, ब्रह्माकुमारी नीलिमा बहन ने बड़े दिल से सहयोग दिया।

स्नेह-मिलन आयोजन की जानकारी हमने अखबार द्वारा जन-जन को दी। उसे पढ़कर अनेक आत्माओं ने फोन पर दबी जबान से जानकारी लेने की कोशिश की। उनमें कोई सी.ए.,कोई इंजीनियर, कोई विद्यार्थी और कोई गृहस्थी बहनें भी

थीं। किसी-किसी को तो पीड़ा होने के बावजूद भी बीमारी का पूरा ज्ञान नहीं था। परन्तु जीने की तमन्ना हरेक में थी। हमारे बारे में पता न चल जाए, यह सोचकर भी वे ज्यादा जानकारी लेने से सदा सकपकाते रहते हैं। समाज में आज भी एड्स पीड़ित और न पीड़ित दोनों को यह भय है कि किसी ने जानकारी लेते देख लिया तो वह मेरे बारे में क्या समझेगा। इस कार्यक्रम में एक पिता भी था जिसका 15 साल का इकलौता बेटा इसका शिकार हो गया था। किसी आप्रेशन के दौरान उसे दूषित रक्त चढ़ा दिया गया था। अत: इन्जेक्शन तथा खून लेते-देते सभी को सावधान रहना चाहिए नहीं तो कोई श्रेष्ठ संस्कारों वाला भी इसका शिकार हो सकता है। इस रोग से ज्यादा भयंकर है समाज का तथा अपनों का बदलता व्यवहार।

स्नेह मिलन के लिए लगभग 15 रोगी, संकोच,भय तथा दबाव की चादर ओढ़े हुए आए। सभी इतने स्वस्थ दिख रहे थे कि उनके रोगी होने पर विश्वास करना मुश्किल हो रहा था। किसी को 5 वर्षो से, किसी को 4 वर्षो से तथा किसी को 6 मास से यह पीड़ा हुई थी। वे इसकी चपेट में कैसे आए, इस बात को जानने की अपेक्षा इस बात पर सारा ध्यान केन्द्रित था कि वे आगे से अपने जीवन में परिवर्तन लाएंगे और औरों को सुरक्षित रखने में मददगार सिद्ध होंगे। आश्रम के आध्यात्मिक वातावरण में धीरे-धीरे उनके संकोच, दबाव और भय की चादर हट गई। एक रोगी ने अपने पूर्व के अनुभव के आधार पर हमारे उद्देश्य के प्रति शंका जाहिर की। उसने कहा कि हम चारों ओर से लाचार हैं और अनेक संस्थाएँ हमारे दुख का जश्न मनाती हैं। सेवा के नाम पर यदि आपको भी ऐसा ही करना है तो हमें हमारे हाल पर छोड़ दीजिए। परन्तु हमने उसे विश्वास दिलाया कि हम आपके सच्चे शुभ चिन्तक हैं।

ब्रह्माकुमारी डॉ. माधवी बहन ने सभी को मेडिकल मार्गदर्शन दिया। जीवन में सकारात्मक परिवर्तन के बारे में ब्रह्माकुमारी जयश्री बहन ने समझाया। सुनते-सुनते वे सभी बहुत शक्ति का अनुभव करने लगे थे, रूहानियत का प्रभाव उन पर छाने लगा था। स्नेह मिलन में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई पिछले 4 वर्षो से नियमित राजयोग का अभ्यास करने वाली एक माता जी ने। ये एच. आई. वी. पीड़िता हैं परन्तु राजयोग के अभ्यास से निर्भयता के साथ आनन्दमय जीवन व्यतीत कर रही हैं। इन्होंने राजयोग द्वारा अपने सकारात्मक परिवर्तन का वर्णन किया जिससे सभी बहुत प्रेरित हुए। उनके चेहरे को देखकर कोई विश्वास नहीं कर सकता कि वे पीड़िता हैं। हम सभी ब्रह्मा-वत्स इन माताजी का बहुत ध्यान रखते हैं, प्यार और सम्मान देते हैं। नहीं तो ईश्वरीय ज्ञान में आने से पहले वह जिन्दा मौत का अनुभव कर रही थी। परमात्मा पिता के मिलने से उसका जीवन ही बदल गया है।

राजयोग शोध प्रतिष्ठान की मेडिकल विंग तथा पीड़ित जन, इस सेवा के लिए संगठित हो जाएँ तो सरकार के सहयोगी बन सकते है। राजयोग इसमें कितना कमाल कर सकता है, यह बात भी दुनिया के सामने स्पष्ट की जा सकती है। हर सेवाकेन्द्र पर ब्रह्माकुमार डाक्टर्स होते हैं। अगर सभी एक दिसम्बर "एड्स विरोधी दिवस" पर ऐसे पीड़ितों के लिए कार्यक्रम रखते हैं तो पूरे शहर में सेवा की लहर फैल सकती है। सरकार तक भी समाचार पहुँच सकता है। कई एच.आई. वी. पीड़ित अच्छे संस्कारों के होते हैं। वे निर्दोष होते भी शिकार हो गए हैं। उनको इस हादसे से निकालने का काम राजयोग सहज कर सकता है।

इस कार्यक्रम की जानकारी अखबार के द्वारा पाकर कई दूरदर्शन

शेष पृष्ठ......25 पर

पुरुषोत्तम संगमयुग एवं 83वें या 84वें जन्म का संगम

–ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुम्बई)

परमपिता शिव परमात्मा का ज्ञान अनेक बातों में अद्वितीय है, जिससे आज की दुनिया की अनेक भ्रांतियाँ दूर हो जाती हैं। विज्ञान की दुनिया में पुनर्जन्म की बात ही नहीं है और धर्म की दुनिया में 84 लाख योनियों का वर्णन है कि पाप कर्म की सज़ा के रूप में अगले जन्म में बिल्ली, कुत्ते या गधे का जन्म मिल सकता है। गौतम बुद्ध के पूर्व जन्मों से सम्बन्धित ऐसी अनेक कथायें लिखित रूप में हैं। अब परमात्मा पिता ने बताया है कि सृष्टि पर मानव जीवन की यात्रा का एक चक्र 5000 वर्षों का है जिसके चार युगों में हम 84 जन्म लेते हैं तथा पुरुषोत्तम संगमयुग पर भविष्य के 21 जन्मों की प्रालब्ध के लिए पुरुषार्थ करते हैं।

कई भाई-बहन प्रश्न पूछते हैं कि सतयुग में आठ जन्म और त्रेतायुग में बारह जन्म अर्थात् ब्रह्मा के दिन में 20 जन्म होते हैं तो इस 21वें जन्म का हिसाब क्या है? मातेश्वरी जी इस सम्बन्ध में हमें कहती थीं कि 21 जन्मों का गायन ठीक है क्योंकि सतयुग में हम सबकी आयु देवी-देवताओं के रूप में लगभग 150 वर्ष की होती है। उसी हिसाब से 8 जन्मों के 1200 वर्ष हुए और 50 वर्ष बच गये। फिर त्रेतायुग में आयु लगभग 100 वर्ष है तो 12 जन्मों के 1200 वर्ष हुए और त्रेतायुग के 50 वर्ष बच जाते हैं। सतयुग और त्रेतायुग के 50-50 वर्ष मिला करके 100 वर्ष अधिक होते हैं इसलिए एक अधिक जन्म अर्थात् 21 जन्मों के सुख-शान्ति-आनन्द के अनुभव का गायन करते हैं। इसके बाद द्वापरयुग में 21 जन्म तथा कलियुग में 42 जन्म होते हैं। अत: ब्रह्मा की रात में 63 जन्म होते हैं। इस प्रकार, ज्यादा-में-ज्यादा एक आत्मा के 84 जन्म होते हैं। परन्तु अगर कोई आत्मा आधा सतयुग बीत जाने के बाद सृष्टि पर आती है तो उसके सब जन्म मिल करके 84 जन्म नहीं होते हैं। बल्कि कुछ कम जन्म होते हैं। उसी प्रकार, द्वापरयुग से आने वाली आत्मायें ज्यादा-से-ज्यादा इस पृथ्वी मंच पर 2500 वर्षों तक रहती हैं और उसी समय में सतोप्रधान, सतो, रजो और तमोप्रधान अवस्थाएँ होती हैं। देखा गया है कि सृष्टि रंगमंच पर आरम्भ से आने वाली आत्माओं की आयु ज्यादा होती है। बाद में आयु की रेखा कम होती जाती है। आयु का हिसाब औसत रूप में गिना जाता है परन्तु हरेक आत्मा की यथार्थ आयु और जन्म तो उस आत्मा के कर्मों के हिसाब से निर्धारित होता है। शिव बाबा तो हमें एक सामान्य सरल भाषा में मूलभूत सिद्धांत जन्मों के बारे में बताते हैं। एक बार इस सिद्धांत को वास्तविक स्वरूप में समझ लें तो किसी भी प्रकार की उलझन नहीं हो सकती है अर्थात् कोई भी प्रश्न उत्पन्न नहीं हो सकता है। क्योंकि जन्मों के साथ-साथ कर्मों का भी हिसाब हरेक आत्मा का लंबा-चौड़ा होते हुए भी अलग-अलग है। और उसी कारण विभिन्न जन्मों के अंदर पद आदि भी निश्चित होते हैं। इसलिए सतयुग-त्रेता में 21 जन्म होते हुए भी कोई आत्मा का पद विश्व महाराजन-विश्व महारानी के रूप में होता है तो अन्य किसी आत्मा का साहूकार का या प्रजा का या दास-दासी के रूप में होता है अर्थात् क्या पद मिलेगा और किस परिवार में जन्म होगा यह सारा हिसाब-किताब कर्मों के आधार पर है।

संगमयुग विशेष युग है और इस विशेष युग में हमारा जन्म भी विशेष है। जिसे शिव बाबा ने नाम दिया है मरजीवा जन्म अर्थात् एक ही शरीर में दुबारा जन्म लेना अर्थात् 83वें जन्म से मुक्ति पाकर 84वाँ जन्म लेना। शरीर एक ही है परन्तु गायन

दूसरे जन्म का होता है। लौकिक दुनिया में ब्राह्मणों को द्विज कहते हैं। क्योंकि एक ही शरीर में दूसरा जन्म लेते हैं जब विधिवत् यज्ञोपवीत किया जाता है।

इन 84 जन्मों के अन्तर्गत ही वर्ण व्यवस्था भी आ जाती है। सतयुग में देवी-देवता, त्रेतायुग में क्षत्रिय, द्वापर में हैं वैश्य और कलियुग में हैं क्षुद्र। क्षुद्र शब्द का अपभ्रंश होकर शूद्र शब्द हो गया है। उसी के कारण वर्ण व्यवस्था के बारे में अनेक प्रकार के प्रश्न उत्पन्न होते रहते हैं। मूलभूत वर्ण व्यवस्था का आज की दुनिया की जाति प्रथा या संप्रदाय व्यवस्था से सम्बन्ध नहीं है। शिव बाबा के द्वारा बताई हुई वर्ण व्यवस्था में कलियुग में तो सभी आत्माएँ क्षुद्र हैं अर्थात् सतयुग के देवी-देवताओं की भेंट में गुणों में या धन-सम्पत्ति आदि में ना के बराबर हैं, परन्तु क्षुद्रता शब्द का शूद्र रूप में रूपान्तर हो जाने के कारण भावनाओं में भी परिवर्तन हो गया। परिणाम रूप आज की दुनिया में अनेक प्रकार के शूद्र कुलों के वर्णन के कारण अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याएँ खड़ी हो गई हैं। वर्तमान में ऐसी जाति-उपजातियों के उत्थान के लिए अनेक प्रकार की नीतियाँ सरकार को अपनानी पड़ती हैं। ऐसी जाति-उपजाति के प्रति अन्य जातियों का, वर्गों का कई बार अपमानजनक या उपेक्षा भरा व्यवहार भी होता है। क्षुद्र और शूद्र के बीच का फर्क अगर सबको मालूम पड़ जाये तो शूद्र नाम रूप के कारण उत्पन्न होने वाली अनेक समस्याएँ खत्म हो सकती हैं। लौकिक व्यवहार में ब्राह्मण वर्ण को श्रेष्ठ माना गया है। परन्तु शिव बाबा के ज्ञान प्रमाण एक आत्मा क्षुद्र से ब्राह्मण बनने लायक तब बनती है जब वह ज्ञान एवं योग के आधार पर अनेक स्वभाव-संस्कार आदि-आदि में परिवर्तन करती है और नये जन्म में ब्रह्मा बाबा को अलौकिक पिता और मातेश्वरी जी को अलौकिक माता के रूप में अपनाती है। ऐसे को परमात्मा पिता, ब्राह्मण शब्द से सम्बोधित करते हैं। लौकिक व्यवहार में ब्राह्मण शब्द और ईश्वरीय परिवार के ब्राह्मण शब्द में मूलभूत अंतर है।

संगम शब्द का अर्थ है कलियुग और सतयुग का संगम। उसी प्रमाण हमारा 83वाँ लौकिक जन्म और 84वाँ अलौकिक जन्म एक ही शरीर में होते हुए भी उनमें विभिन्नता है। अत: इस जन्म का नाम भी एक प्रकार से संगम है, जिसके अन्दर हमें हमारे आसुरी संस्कारों पर विजय प्राप्त करके दैवी संस्कारों का सींचन भविष्य के लिये करना है। अत: 83वें जन्म के सम्बन्धों के प्रति हमारा दृष्टि बिन्दु बदल जाता है। यह 84वाँ जन्म एक नया जन्म है, उसका परिवर्तन हमें हमारे अन्दर करना है।

ब्रह्मा बाबा के जीवन से इस बात में हमें प्रेरणा मिलती है कि हमें 84वें जन्म के स्वभाव-संस्कार-सम्बन्ध में कितना परिवर्तन करना चाहिए। ब्रह्मा बाबा की युगल जशोदा माता 83वें जन्म में दादा लेखराज की पत्नी थी और घर के सारे कारोबार की स्वामिनी थी। किन्तु दादा लेखराज के अन्दर शिव बाबा की पधरामणि हुई और उनके सम्बन्धों के दृष्टिकोण में परिवर्तन हो गया और सारे मानव समाज के पिता हो गये अर्थात् जशोदा माता 83वें जन्म में पत्नी थी और 84वें जन्म में बच्ची बन गई। और हमारी दादियों ने तो देखा है कि वो अपने नये सम्बन्ध और संस्कार के आधार पर उस समय के रहने के स्थानों में झाड़ू-पोंछा आदि स्थूल कर्म भी सहर्ष करती थी, जो उन्होंने 83वें जन्म में कभी नहीं किया था।

दादा लेखराज के रूप में, ब्रह्मा बाबा के बच्चों को इतनी परीक्षा नहीं आई क्योंकि 83वें जन्म में भी वे दादा लेखराज के बच्चे थे और 84वें जन्म में भी प्रजापिता ब्रह्मा बाप के बच्चे बने। यशोदा माता ने लौकिक सम्बन्ध में परिवर्तन को सहर्ष स्वीकार किया,

वह मैंने स्वयं अनुभव किया है। कई बार उनसे व्यक्तिगत रूप में मिलने का मुझे सौभाग्य मिला। उनके अन्तिम दिनों में जब मुम्बई में वे हॉस्पिटल में थीं तब मैं गया था। शारीरिक रोगों के कारण उनको कष्ट भी था, फिर भी प्रेम-प्यार से मिलती थीं और टोली अर्थात् मुख मीठा भी कराती थीं। मैंने उनको मना भी किया कि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है इसलिए आप यह टोली आदि देने का कष्ट न उठावें। परन्तु फिर भी उन्होंने सहज रूप से उत्तर दिया कि शरीर अपना काम करता है और मुझ आत्मा को अपना काम करना है और इसलिए आप जैसे बच्चे जो मिलने को आये हैं, उनका मुख मीठा कराना मेरा फर्ज है। अगले ही दिन उनका शरीर छूट गया अर्थात् अंत तक उन्होंने अपने 84वें जन्म के नये सम्बन्ध और संस्कारों को अच्छी रीति से निभाया। ऐसी महान आत्मा से प्रेरणा मिलती है कि हमें भी अपना 84वाँ जन्म सफल करना चाहिए। क्योंकि इसी 84वें जन्म के आधार पर भविष्य की प्रालब्ध का निर्माण होता है और उसका ही गायन है 'अंत मति सो गति' अर्थात् इस 84वें जन्म में हमारी जैसी मति (बुद्धि एवं व्यवहार) होगा वैसी हमारी गति अर्थात् भविष्य प्रालब्ध होगी।

ब्रह्मा बाबा जब अव्यक्त हो गये तब उनके पार्थिव शरीर का विधिवत् अन्तिम संस्कार करने की जिम्मेवारी आदरणीया दादियों ने मुझे दी थी। तब मेरे मन में एक दुविधा उत्पन्न हुई थी कि ब्रह्मा बाबा के पार्थिव शरीर का अग्नि संस्कार कौन प्रारम्भ करे? क्योंकि वहाँ पर ब्रह्मा बाबा का लौकिक सुपुत्र नारायण भी उपस्थित था तब मैंने शिव बाबा को संदेश आदरणीया संतरी दादी जी द्वारा भेजा और मुझे संदेश में श्रीमत मिली कि यह जो शरीर छूटा है यह 83वें जन्म के दादा लेखराज का नहीं है किन्तु 84वें जन्म के प्रजापिता ब्रह्मा का है। नारायण बच्चे के लौकिक पिता 83वें जन्म के दादा लेखराज थे किन्तु अब 84वें जन्म के आधार पर अव्यक्त होने वाले प्रजापिता ब्रह्मा हैं और उसके तो आप सभी अलौकिक बच्चे हैं। इसलिए अग्नि संस्कार का प्रारम्भ तो ब्रह्मा बाबा ने जिनको निमित्त बनाया है ऐसी दादियों से ही होना चाहिए। उसी प्रकार विधिवत् अग्नि संस्कार का कार्य संपूर्ण हुआ और इस प्रसंग ने मेरे मन पर अविस्मरणीय छाप लगा दी कि हमें 83वें जन्म और 84वें जन्म का फर्क समझ कर 84वें जन्म की जिम्मेवारी व महानता को स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि यह 84वाँ जन्म अर्थात् अन्तिम जन्म सारे कल्प के 5000 वर्षों के हिसाब से अमूल्य है और अगर इस 84 वें जन्म में कोई भूल करेंगे तो उसी के कारण हमारा भविष्य भी ऊपर-नीचे हो जायेगा। इसलिए इस लेख द्वारा आप ज्ञानामृत पढ़ने वाले सभी भाई-बहनों को नम्र निवेदन है कि अपने 84वें जन्म को अवश्य ही सफल करें। नहीं तो गायन है – अब नहीं तो कब नहीं। ❑

उल्हासनगर- ब्र.कु. सोम बहन, मेयर ज्योति बहन, कुमार आयलानी जी, विधायक भ्राता पप्पू कालानी जी तथा अन्य आध्यात्मिक झाँकी का उद्घाटन करते हुए ।

आइये, भीतर झाँकें

–ब्रह्माकुमार प्रकाश, आबू पर्वत

इंसान हजारों सालों से शोध करता आ रहा है,चन्द्रमा तक पहुँचने में वह सफल हो गया है परन्तु बिडम्बना यह है कि अपने भीतर एक सेंटीमीटर भी नहीं चल पाया। जिस दिन वह भीतर की ओर चलना सीख जायेगा उस दिन उसकी मंज़िल सामने होगी। फिर सारी दौड़-धूप, तड़पना, भटकना बन्द हो जाएगा। शान्ति, गहरी शान्ति, असीम आनन्द और अतीन्द्रिय सुख में खो जायेगा। जब भीतर झाँकना शुरू कर देता है तो वह उठ जाता है और बाह्यमुखी रूप से जब बाहरी जगत में दौड़ना शुरू करता है तो वह गिरता चला जाता है।

कैसे उदय हो भाग्य?

मैं हूँ, यह सबको पता है लेकिन मैं कौन हूँ, कैसा हूँ, यह कोटों में कोई और कोई में भी कोई बिरला ही जानता है। जन्म से इन्सान इस हाड-माँस के पुतले को देखता आया है, इसका ही हाल-चाल पूछता आया है। इसी से बात करता रहा है। इसी को अपना भाई, बाप, पति, बेटा, पत्नी समझता रहा है परन्तु इस के अन्दर जो चेतन आत्मा है उससे किसी ने बात नहीं की, उसका हाल किसी ने नहीं पूछा, उसका परिचय किसी ने नहीं लिया। अब परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हो कर हम आत्माओं से बात की है, शरीर के भीतर, मैं-मैं कहने वाली आत्मा का हाल पूछा है और उसका सत्य परिचय करवा कर हमें ही हमसे मिलवा दिया है। स्वयं का सत्य परिचय ही आध्यात्मिकता का प्रथम पाठ भी है तो अन्तिम पाठ भी। भूला भी यही है और याद भी यही करना है। सबसे कठिन भी यही है और सबसे आसान भी यही है। समझने योग्य भी यही है और समझाने योग्य भी यही है। बाहर शरीर है और अन्दर आत्मा है। जब तक इन्सान स्वयं को हड्डी-माँस, खून-पीक का लोथड़ा समझता रहेगा और दूसरों को भी इसी नजर से देखता रहेगा तब तक दुर्भाग्य, दुर्दशा और दुःख उसका पीछा नहीं छोड़ेंगे। जैसे ही वह स्व के सच्चे स्वरूप में स्थित हो जायेगा उसके दिन बदल जायेंगे, भाग्य उदय हो जायेगा, तकदीर खुल जायेगी, सुख के दिन आ जायेंगे और जीवन खुशियों से भर जायेगा। शरीर स्थूल और आत्मा सूक्ष्म है। जो चीज़ जितनी सूक्ष्म होती है उसकी उतनी ही ज्यादा कीमत होती है। एक किलो लोहा 25 रुपये में आता है। यदि उसकी कुल्हाड़ी, फावड़ा, चाकू आदि औज़ार बनाये जायें तो यही एक किलो लोहा 150-200 रुपये में बिक जायेगा। यदि इससे गाड़ी के पुर्जे बनाये जायें तो हज़ारों में बिक सकते हैं। यदि इलेक्ट्रानिक पुर्ज़े अथवा कम्प्यूटर के पुर्ज़े बनाये जायें तो कीमत लाखों में हो सकती है। कहने का भाव यह है कि जो चीज़ जितनी ज्यादा सूक्ष्म होगी उसकी कीमत उतनी ही अधिक होती चली जायेगी। अब विचार कीजिये कि आप आत्मा कितनी सूक्ष्मतिसूक्ष्म हैं! आपकी कीमत का अनुमान लगाना आसान है क्या? इसलिये कहते हैं कि अपने को पहचानो। अपनी कीमत को जानो और उसी स्वमान से व्यवहार में आओ तो दुःख की परछाई कभी भी आपको छू नहीं सकेगी।

तुम आनन्द स्वरूप हो

सामवेद के छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है कि हे मानव! जिस आनन्द को तू खोज रहा है, वह आनन्द तू ही है। यही बात अब शिव बाबा कह रहे हैं कि हे आत्मा! तू आनन्द स्वरूप है। सुख स्वरूप है। शान्त स्वरूप है। पवित्र स्वरूप है। यदि सारी पृथ्वी के लोग ऐसा चिन्तन आरम्भ कर दें कि मैं एक आत्मा हूँ, शान्त स्वरूप हूँ ,ज्योति स्वरूप हूँ, आनन्द स्वरूप हूँ, सुख स्वरूप हूँ, शक्ति स्वरूप हूँ, तो अगले तीन मिनिटों में यहाँ स्वर्ग की स्थापना हो जायेगी। आत्मा इस शरीर की भृकुटी

में रहती है और यहाँ से ही सम्पूर्ण शरीर और कर्मेन्द्रियों पर शासन करती है। आत्मा पुरुष है और शरीर प्रकृति है। प्रकृति पुरुष की दासी है। लेकिन तभी तक जब तक कि पुरुष अपने स्वमान की सीट पर स्थित है। जैसे ही यह सीट से नीचे उतर कर, प्रकृति के संग में स्वयं को देह मानने की भूल करता है,वैसे ही सांसारिक मायाजाल, विकार, दु:ख, रोग एवं चिन्तायें उसे घेर लेती हैं ।

शरीर का आकर्षण मृगतृष्णा है

कब तक इस देह रूपी पिंजरे में छटपटाते रहोगे? स्वतन्त्र हो कर उड़ान भरो, फोड़ दो इस देह रूप अण्डे को। निकलो बाहर और खुली हवा में साँस लो। फिर सुख ही सुख है। शान्ति ही शान्ति है। आनन्द ही आनन्द है। खुशियाँ ही खुशियाँ हैं। सुख और शान्ति को मानव बाहर ढूँढते फिरते हैं। ऐसा सोचकर कि सुख भौतिक पदार्थों में है, वैभवों में है, व्यक्तियों में है, वे छले जा रहे हैं। सावधान! यदि सुन्दर स्त्री में सुख होता या शानदार मकान में रहने पर आनन्द मिलता या करोड़ों- अरबों रुपये जमा करने से खुशी हासिल हो सकती तो दुनिया में ऐसे लोगों की क्या कमी है जिनके पास ये सब चीज़ें आसानी से उपलब्ध हैं? लेकिन फिर भी वे सुखी कहाँ? यदि राजमहलों में सुख होता तो सिद्धार्थ राजपाट त्याग कर जंगल क्यों जाते? सुख बाहर नहीं, अन्दर है इसलिये इस देह रूपी मिट्टी से स्वयं को अलग मान कर चलते रहो। इसका आकर्षण न केवल मृगतृष्णा है बल्कि एक छलावा भी है। यह तो वैसे ही है जैसे मिट्टी के फल,जो बाहर से असली दिखते हैं और 12 महीने ताज़ा व हरे महसूस होते हैं। मिट्टी के फलों का ना हम भाव पूछते हैं, न उन्हें चखते हैं, न चाटते हैं। जरा सोचें, कोई भी इन फलों को चखने लगे, चाटने लगे तो उसे हम क्या कहेंगे? मूर्ख ही कहेंगे ना! ठीक वैसे ही जो लोग प्रतिदिन इस माटी के पुतले को चखने, चाटने व चूसने का प्रयास करते रहते हैं, वे कितने मूर्ख होंगे? इसलिये सावधान! बार-बार इस देह का ही परिचय न दो बल्कि आत्मा का भी परिचय दो। समझो, कहीं चोट लगी, जख्म हुआ और डॉक्टर ने पट्टी बांधी। हम उस पट्टी को दिन में 10 बार खोलते रहे तो जख्म कैसे भरेगा? वैसे ही यदि हम दिन में 10 बार शरीर का ही परिचय देते और लेते रहे तो फिर आत्मा कब याद आयेगी?

स्व की सीट पर बैठ मालिक बनो

यदि सुख भोगना है तो सुख के संस्कार बनाने होंगे। आत्मा का मूल संस्कार सुख और शान्ति है। खुशी और आनन्द है। लेकिन स्वयं को देह मानने से मन भटकता है, चंचल होता है। चंचल मन कमज़ोर होता है इसलिये सुरक्षा ढूंढता है, चतुराई करता है, जमा करता है। मरने से डरता है। लेकिन जैसे ही वह अपनी स्व की सीट पर बैठ जाता है, वह अधिकारी बन जाता है, मालिक बन जाता है। शक्तिशाली हो जाता है। जीते जी अपने को आत्मा समझने का अभ्यास पक्का कर लो तो अन्त में पछताना नहीं पड़ेगा। धर्मशास्त्रों को मनन-चिन्तन द्वारा व्यवहारिक जीवन में न उतारा जाए तो मिठास कैसे आयेगी? ऊंचे-ऊंचे लाऊड स्पीकर लगाने से शोर तो ज़रूर होगा लेकिन शान्ति की चिड़िया उड़ जायेगी। सुख और दु:ख, पाप और पुण्य, स्वर्ग और नर्क, जीवन और मृत्यु आदि गुह्य विषयों के सम्बन्ध में समय-समय पर ऋषि-मुनियों, सन्त-महात्माओं, पण्डित-विद्वान और आचार्यों ने अपने-अपने अनुभव से आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन किया है। यद्यपि इन्सान स्थायी सुख-शान्ति के लिये सदैव प्रयत्नशील रहा लेकिन सदाकाल के लिये इनको अर्जित करने में बुरी तरह नाकाम रहा। फिर भी समय अनुसार साधनों का अविष्कार हुआ। रहन-सहन का स्तर बदला। वैज्ञानिक अविष्कारों ने मानवीय जीवन में आश्चर्यजनक

शेष पृष्ठ....22 पर

तीन शिष्य

–ब्रह्माकुमार सूरतबहादुर शेर, काठमाण्डू (नेपाल)

एक गुरु के तीन शिष्य थे। परीक्षा लेने के लक्ष्य से गुरु ने तीनों को बुलाया और कहा – तुम सब जिस रास्ते से जाते हो उस रास्ते से मत जाना बल्कि सामने वाले संकरे रास्ते से जाना। तीनों ने सुना तो वे बोले– गुरुदेव, इस रास्ते में आगे कंटीली बाड़ आ जाती है, हम आगे कैसे जा सकेंगें? गुरु ने कहा – आदेश, आदेश है। किसी भी तरह जाओ, इसी रास्ते से जाना है। इसका कोई विकल्प नहीं है, कोई तर्क मैं सुनना नहीं चाहता, कुआं आये चाहे खाई आए। बाड़ आए या पहाड़ आए, इसी रास्ते से जाना है। शिष्यों को मालूम था कि ज्यादा तर्क-वितर्क करेंगे तो साधना से निकाल दिए जाएंगे इसलिए वे गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त कर उनके कहे रास्ते पर आगे बढ़ने लगे। जब मार्ग में अवरोध आया तो पहले शिष्य ने सोचा कि इस बाड़ को पार करने में तो कांटे चुभेंगे, पैर लहूलुहान हो जाएंगे, फिर भी मुझे गुरु के आदेश का पालन करना ही है। शरीर तो नश्वर है पर साधना अमर है। वह चल पड़ा, कांटों से पैर बिंध गए, रक्त बहने लगा, अपार पीड़ा हुई पर वह बाड़ को पार कर गया। दूसरे ने सोचा – यह कैसा गुरु है? क्या शिष्यों को कष्ट देना ही गुरु का काम है? क्या इनके दिल में कोई दया या प्यार नहीं है? क्यों सताते हैं शिष्यों को? चलो गुरु बदल देंगे, दुनिया में गुरुओं की कमी नहीं है। मैं इस रास्ते से जाऊंगा ही नहीं। वह बैठ गया। तीसरे शिष्य ने सोचा– गुरु, गुरु है। उनका आदेश, सम्मान के साथ शिरोधार्य है। आदेश में कोई न कोई गुप्त रहस्य है क्योंकि एक साधनामय व्यक्ति के मुख से निकली बात निरुद्देश्य नहीं हो सकती इसलिए मुझे इसी रास्ते से जाना है। वह चला। घास-फूस इकट्ठा करके एक लंबा पट्टा बनाया, उसे बाड़ पर डाल दिया और सहज रीति से बाड़ पार कर गया।

इस संसार में भी परम सत्गुरु ईश्वर की आज्ञा के प्रति अलग-अलग लोगों के अलग-अलग दृष्टिकोण रहते हैं। यह संसार भी कांटों से भरा कंटीला मार्ग है। कुछ लोग यहां के विकार रूपी कांटों को देखकर उनको पार करने की हिम्मत हार जाते हैं। वे संसार को स्वप्न मान कर जीवन की ज़िम्मेवारियों को छोड़कर जंगल में चले जाते हैं और संन्यासी बन जाते हैं। शरीर निर्वाह के लिए दूसरों पर आधारित हो जाते हैं। दूसरे प्रकार के वे लोग हैं जो विकारी घर-गृहस्थ में रहते हैं और अज्ञान वश विकारों से आत्मा को छलनी भी करते रहते हैं। विकारों की मार खाते हुए जीवन यात्रा को जैसे-तैसे पार करते रहते हैं परंतु तीसरे प्रकार के लोग वे हैं जो ईश्वरीय आदेशों को भली-भांति समझते हैं। वे यह मानकर चलते हैं कि भगवान सुख का सागर है। वह किसी को दु:ख दे नहीं सकता। संसार में जो विकार और कांटे हैं वे न तो भगवान की देन हैं और न ही वो उनमें फंसने का आदेश देता है। भगवान तो परम पवित्र है। वह कहता है कि इन विकारों से बचने के लिए युक्ति का प्रयोग करो। इसलिए ऐसे लोग काम-क्रोध रूपी कांटों के बीच में रहते हुए ज्ञान और योग के बल से कमल पुष्प समान न्यारे और प्यारे बन जाते हैं। ज्ञान और योग, मुलायम घास बनकर, कंटीली बाड़ को भी पार करा देते हैं। उनको यह मालूम है कि हिम्मत रखने से मदद मिलती है। विघ्न और बाधाएं तो जीवन में आती ही हैं लेकिन ईश्वरीय विवेक का प्रयोग करने से वे बाधाएं सूली से कांटा बन जाती हैं। ईश्वर पिता के आदेशों में संपूर्ण निश्चय रखने से पहाड़ भी राई समान महसूस होता है। परमात्मा के ये प्रीत

शेष पृष्ठ......27 पर

जो श्रीमत पर चले, वह फूले-फले

–ब्रह्माकुमार रामलोचन, शान्तिवन (आबू रोड)

संसार में अधिकतर लोगों की यह मान्यता रहती है कि व्यक्ति के संस्कार नहीं बदल सकते अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि कुवृत्तियों से छुटकारा पाना बहुत ही मुश्किल कार्य है। परन्तु प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में सिखाए जा रहे राजयोग के बल से कैसी भी विकृति, विकार, इन्द्रिय अधीनता, चंचलता, अकर्मण्यता आदि से सहज छुटकारा पाया जा सकता है। राजयोग एक आध्यात्मिक विज्ञान है। इसकी साधना में व्यक्ति को देह तथा इन्द्रियों से न्यारा होकर, हल्का होकर, आत्मस्वरूप में टिक कर, तीसरे नेत्र से प्रभु पिता को निहारने, उनसे मिलन मनाने, उनका सामीप्य पाने और उनके गुणों को आत्मसात करने का अनुभव होता है। ऐसा करने में उसे असीम आन्तरिक अर्थात् अतीन्द्रिय आनन्द मिलता है और वह सांसारिक आकर्षणों, तृष्णाओं तथा दु:ख देने की आदतों से स्वतः मुक्त होता जाता है। जिस प्रकार, सूर्य की किरणें पड़ते ही कमलिनी खिल जाती है, उसी प्रकार ज्ञान सूर्य परमात्मा पिता की सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम..... से सम्पन्न किरणें आत्मा पर पड़ते ही आत्मा भी निर्मल हो जाती है, उसके संस्कारों में दिव्यता का तेज भर जाता है। ब्रह्माकुमार रामलोचन भाई इस समय शान्तिवन के विशिष्ट भण्डारे की सुव्यवस्था के निमित्त हैं। बहुत ही अनुशासित, नियमित, योगयुक्त, सादा, सरल और तपस्वी जीवन है इनका। राजयोग द्वारा जीवन परिवर्तन की कहानी इन्हीं की जुबानी प्रस्तुत है।

–सम्पादक

मेरा लौकिक जन्म अयोध्या के निकट लिलोई कलाँ नामक छोटे-से गाँव में हुआ। वहीं मैंने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की। माता-पिता धार्मिक स्वभाव के और सम्पन्न थे। भाई-बहनों में मैं सबसे छोटा था। माता-पिता की सुन्दर पालना के बावजूद दोस्तों के खराब संग से मेरे संस्कार विद्यार्थी जीवन में ही बिगड़ गए। मुझे गुस्सा इतना अधिक आता था कि अगर किसी ने मेरा कहना नहीं माना तो उसका घर तक जला देता था। ऐसा कई बार किया भी। मुझे अपने सम्पन्न माता-पिता से पैसे मिल जाते थे। सहज रीति से न मिलने पर कई बार पिता जी की जेब से पैसे चोरी भी कर लेता था और दोस्त पैसे के कारण मेरे पीछे लग जाते थे। कई बार हम स्कूल से भाग भी जाते थे। अपनी शरारतों के कारण एक बार दसवीं कक्षा में फेल भी हुआ। कई बार हमारे घर उलाहना आता था लेकिन गांव में पिता जी का अच्छा नाम होने के कारण मामला ठण्डा हो जाता था।

मैं अपने क्रोधी स्वभाव से तंग था

मैं अपनी बुराइयों को महसूस करता था, उनसे बहुत तंग था और उन्हें छोड़ना भी चाहता था। मैं विचार करता था कि दूसरों को दु:ख देना बहुत खराब बात है। जब भी मुझसे दु:ख देने का कोई कार्य हो जाता था तो सारी रात नींद नहीं आती थी। बहुत बेचैनी होती थी। लेकिन यह जानते हुए भी कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह बहुत ही गलत है, मैं उससे छुटकारा नहीं पा रहा था। एक बार हमारे घर में एक गुरु जी आए। रात को जब सब सो गए और मुझे नींद नहीं आ रहीं थी तो मैं उठकर गुरु जी के पास गया और उनसे कहा कि मुझे अपने साथ लेकर अभी भाग चलो। उसने कहा कि जब तक माता-पिता विधिवत् छुट्टी नहीं देंगे, मैं साथ

लेकर नहीं जाऊँगा। मैंने कहा कि माता-पिता तो छुट्टी कभी भी नहीं देंगे, भले ही मुझमें कितनी भी बुराइयाँ क्यों न हों। लेकिन उसने मेरी बात नहीं मानी। मैं अपने क्रोधी स्वभाव से तंग तो था ही, मुझे घर छोड़ कर संन्यासी बन जाने में ही अपनी भलाई नज़र आती थी इसलिए इस घटना के कुछ दिन बाद मैं स्वयं ही घर छोड़ कर भाग गया और जंगल में एक संन्यासी के पास चला गया। उसके साथ 6 मास रहा। उसने मुझे शास्त्र पढ़ना सिखाया और कहा कि गुरु जी की सेवा करते रहो, उनमें भावना के फलस्वरूप भगवान मिल जायेगा।

सत्संग की ओर मेरा झुकाव

लेकिन 6 मास भावनापूर्वक सब कुछ करने के बाद भी मुझे कुछ नहीं मिला। आखिरकार मेरे बाह्यमुखी संस्कार मुझे वापिस घर खींच लाये। फिर बड़े भाई के पास कोलकाता चला गया और वहाँ देश-भक्ति से भरी एक फिल्म देखी जिसका मुझ पर इतना प्रभाव पड़ा कि मैं सेना में भर्ती हो गया। लगभग छ: साल वहाँ नौकरी की। मुझे अनुभव हुआ कि सेना में अनुशासन तो बहुत है लेकिन पारिवारिक स्नेह नहीं है। मुझे अपने माता-पिता और मित्रों की बहुत याद आती थी। वहाँ अधिकारियों के कड़े अनुशासन में मुझे अपने संस्कारों को दबा कर रखना पड़ता था। बाद में अपने संस्कारों को वहाँ के वातावरण के अनुकूल न होते देख मैंने नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया। मेरे बुरे संस्कार मुझे फिर तंग करने लगे। पुनः मेरे मन में विचार आया कि अब कुछ बड़े-बुजुर्गों का संग करना चाहिए क्योंकि क्रोध करके देख लिया और दूसरे विकारों को अपना कर भी कुछ नहीं मिला। सोचा कि जब इन विकारों से कुछ मिलता ही नहीं है तो क्यों न इनको छोड़ दिया जाए और मैं सत्संग की तरफ झुक गया। मैंने कीर्तन और सत्संगों में जाना शुरू कर दिया। एक दिन विक्टोरिया ग्राउण्ड में एक महात्मा जी का प्रवचन चल रहा था। मैंने उनसे पूछा – 'महाराज, मेरी इन्द्रियाँ मेरे वश में कैसे हों ?' उन्होंने कहा – 'बड़ी सहज विधि है। जिस प्रकार लक्ष्मण जी सदा सीता जी के पाँव ही देखते थे, ऐसे ही तुम भी सदा नज़रों को नीचे ही रखो, ऊपर देखो ही नहीं। ऐसा करने से न तो बुद्धि विचलित होगी और न ही गुस्सा आयेगा। कोई अन्य बुराई भी नहीं आयेगी।' मैं तो अन्दर-ही-अन्दर खुश हुआ क्योंकि रामायण पढ़ता था और इन बातों पर विश्वास भी करता था। परन्तु ज्योंहि ग्राउण्ड से बाहर आया तो आँखें नीची रह ही नहीं सकीं। अन्दर बुराई भरी हो तो आँखें नीची रह ही नहीं सकतीं।

चारों धाम की यात्रा और निर्जल व्रत किए

इसके बाद कुछ लोगों ने सुझाव दिया कि चारों धाम की यात्रा करो जिससे तुम्हारे पाप नष्ट होंगे। फिर माता-पिता को साथ लेकर मैं चारों धाम की यात्रा पर निकल पड़ा और सोचा कि जितना अधिक-से-अधिक दान करेंगे उतना जल्दी-से-जल्दी पापों से और बुरे संस्कारों से मुक्ति हो जायेगी। करीब दो मास तक चार प्रसिद्ध धामों – बद्रीनाथ, उज्जैन, जगन्नाथ, सोमनाथ की तीर्थ यात्रा करके वापस आ गए। इस यात्रा में जेब तो खाली हो गई पर मन पापों से खाली नहीं हुआ। पाप खत्म होने की निशानी है संस्कार-परिवर्तन। लेकिन संस्कार तो बिल्कुल ही नहीं बदले। बस यह दिलासा भर मिला कि चलो, यात्रा करके आ गए।

जब यात्रा करके भी मन का मैल नहीं धुला तो मैंने सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य जैसे कि हनुमान चालीसा, वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि खरीद लिए और उनका अध्ययन-पठन प्रारम्भ किया। परन्तु मन बिल्कुल नहीं टिकता था। मैंने पूजा करने में मन को लगाना चाहा। सभी मुख्य-मुख्य देवी-देवताओं जैसे

श्रीराम, श्रीकृष्ण, श्री गणेश, श्री हनुमान, श्री दुर्गा, श्री लक्ष्मी आदि की पूजा करने लगा। अन्दर में भय रहता था कि एक भी देवता नाराज ना हो जाए इसलिए लगभग सभी पर जल चढ़ाना, सभी की थोड़ी-थोड़ी स्तुति करना, यह सब करता था। इस सारे कार्य में मुझे सुबह नौ बजे से दोपहर के दो बज जाते थे। परन्तु मेरा परिवर्तन, जो मैं चाहता था, वह नहीं हुआ। फिर एक दिन अचानक मन में बहुत सुन्दर विचार उभरा कि यदि मुझे भगवान मिल जाएँ तो उनसे वरदान माँग लूँगा और सहज ही मेरी बुराइयाँ चली जायेंगी। परन्तु भगवान मिलेगा कैसे, यह अनसुलझा प्रश्न मेरे सामने था। मैंने पूजा के साथ-साथ निर्जल व्रत भी रखने शुरू कर दिए। एक ऐसे ही व्रत के दिन मैंने अपने से प्रतिज्ञा कर ली कि यदि एक मास के अन्दर-अन्दर भगवान न मिला तो गंगा जी में कूद कर जान दे दूँगा। इस संकल्प ने मुझे बहुत दृढ़ता दी।

ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक से मिली शान्ति

पूजा करते-करते 30वाँ दिन आ गया। भगवान से मिलन अभी भी बाकी था। मैंने दृढ़ निश्चय किया था कि आज गंगा जी पर जाकर वापस नहीं लौटूँगा। निर्जल व्रत था उस दिन। दोपहर के चार बजे सोकर उठा तो मैं बिना सोचे-समझे उसी रास्ते से आगे बढ़ने लगा जिस रास्ते से रोज सब्जी लेने जाता था। उसी रास्ते में ब्रह्माकुमारी आश्रम (एलगिन रोड स्थित म्यूजियम) था। आश्रम को मैंने हजारों बार देखा था पर कभी अन्दर नहीं गया था। उसके द्वार पर सरस्वती का सुन्दर चित्र बना हुआ था। उस दिन मैं उसे मन्दिर समझ कर अन्दर चला गया। वहाँ एक बुजुर्ग ब्रह्माकुमारी बहन थी। उसने संग्रहालय के मॉडल्स की व्याख्या करनी प्रारम्भ की परन्तु मैं एकाग्रता से सुनने के बजाए एक से दूसरे चित्र तक दौड़ ही लगाता रहा। मेरे बाल बिखरे थे, ठीक कपड़े भी नहीं पहने थे परन्तु बहन जी में गजब का धैर्य था। उन्होंने मुझे बाध्य नहीं किया और जैसे मैं देख रहा था, मुझे देखने की छुट्टी दे दी। ज्ञान के इतने गहरे राज़ उस संग्रहालय में भरे पड़े थे पर मेरे पल्ले तो कुछ भी नहीं पड़ा। थोड़ी देर बाद मैं बाहर आ गया। बाहर ईश्वरीय साहित्य का स्टॉल था। मेरी नजर एक छोटी-सी किताब 'विकारों पर विजय कैसे हो' पर पड़ी। केवल 25 पैसे कीमत वाली उस पुस्तक को मैंने बहन जी से माँग लिया और उन्होंने मुझे बिना पैसे के ही पुस्तक दे दी। ज्योंहि मैं पुस्तक लेकर बाहर निकलने लगा, बहन जी के मुख से निकला कि यहाँ 7 दिन का कोर्स भी दिया जाता है, चाहो तो कोर्स कर लेना। रात्रि में मैंने ड्यूटी के समय किताब को पढ़ना शुरू किया। उस पुस्तक में लिखे शब्दों में इतनी शक्ति, इतना आकर्षण था कि उसे पढ़ते-पढ़ते मन को शान्ति की महसूसता होने लगी। मैंने पूरी पुस्तक पढ़ ली और सोचा कि यदि पुस्तक पढ़ने से इतनी शान्ति मिल सकती है तो 7 दिन का कोर्स करने से कितनी न शान्ति मिल जाएगी! यही सोच कर मैंने दृढ़ संकल्प किया कि दो दिन कोर्स करके देख लेता हूँ, शान्ति मिल गई तो ठीक, नहीं तो गंगा जी में कूदना तो है ही। इस प्रकार, जीवघात का विचार 2 दिन के लिए स्थगित हो गया।

प्रकाश का तेजोमय गोला दिखाई पड़ा

अगले दिन से मैंने कोर्स करना शुरू किया। परन्तु इतने सारे शास्त्र पढ़े होने का अहंकार मुझमें भरा हुआ था। कोर्स के दौरान दुनिया भर के उल्टे-सीधे प्रश्न पूछता था और मन में बार-बार यही आता था कि छोटी-छोटी कन्याएँ मुझे क्या समझायेंगी। पहले दिन के पाठ में मुझे कुछ समझ में नहीं आया। फिर भी जाते-जाते 'योग की विधि और सिद्धि' पुस्तक खरीद ली। मैं राम का भक्त था।

रात की ड्यूटी के दौरान आँखें बन्द करके राम जी का नाम लेकर उस पुस्तक का एक पन्ना खोला जिस पर राजयोग कॉमेन्ट्री लिखी हुई थी। मैंने कॉमेन्ट्री के एक-एक शब्द को रट लिया। रात के 2 बजे थे। किताब को एक तरफ रख, कॉमेन्ट्री के जितने शब्द याद हो गए थे उनको मन-ही-मन दोहराने लगा और मुख भी ऊपर भगवान की तरफ किया हुआ था। तभी बन्द आँखों से ही मुझे प्रकाश का एक तेजोमय गोला दिखाई पड़ा। उस गोले से आती हुई किरणें जब मुझ पर पड़ी तो ऐसा लगा कि सारी कर्मेन्द्रियाँ शान्त और शीतल हो गईं हैं। एक बहुत ही सुखद अनुभूति हुई जिसका वर्णन शब्दों में कठिन है। बस उसी क्षण से मुझे ज्ञान में विश्वास हो गया। मुझे जो चाहिए था वह मिल गया। मन में शान्ति आ गई, क्रोध कम हो गया। उसी दिन से नियमित क्लास करनी शुरू कर दी। सभी प्रश्न खत्म हो गए और मन प्रसन्नचित्त हो गया। व्यवहार में बहुत परिवर्तन आ गया। आश्रम वालों ने भी मेरा बदला हुआ जीवन देखा और उसी दिन से मैंने ईश्वरीय सेवाओं में हाथ बँटाना शुरू कर दिया।

– क्रमशः

आइए, भीतर झाँकें....पृष्ठ 17 का शेष

परिवर्तन लाया। बाहर से मानव आगे बढ़ा लेकिन भीतर से वह काफी पिछड़ गया। बाहर से शिक्षित अन्दर से अशिक्षित ही रहा। बाहर से टिप-टाप अन्दर से अस्त-व्यस्त। इस चका-चौंध में वह अपने आप को ही भूलता चला गया। मानवीय मूल्यों का ह्रास हुआ। विलासी जीवन, नकारात्मक सोच तथा सही आध्यात्मिक शिक्षा के अभाव से व्यक्ति के जीवन में रोग, शोक, तनाव, समस्यायें, अशान्ति का प्रार्दुभाव हुआ।

अन्ततोगत्वा परम पिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण मानवी तन में अवतरित हो कर न केवल उपरोक्त अनुत्तरित शंकाओं का समाधान किया अपितु ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग की शिक्षा दे कर दुःख, रोग तनाव एवं अशान्ति से घिरे मानव को नर से नारायण तथा नारी से लक्ष्मी जैसा महान पूज्य बनने का लक्ष्य दिया। आज विश्व भर में करोड़ों लोग इस ईश्वरीय ज्ञान से घर गृहस्थ में रहते हुये अपने जीवन को हर हाल में खुशहाल बना रहे हैं।

आज की सबसे बड़ी मांग यही है कि तन स्वस्थ हो, मन शान्त एवं आनन्दित हो, पर्याप्त धन और यश मिलता रहे। यही सब पाने के लिये नित्य नये तरीके खोजे जा रहे हैं। फिर चाहे कोई चोरी-बेईमानी कर रहा है अथवा ईमानदारी व मेहनत की रोटी खा रहा है। चाहे कोई अच्छी पढ़ाई व नौकरी कर रहा है या घर-बार छोड़ संन्यासी बन रहा है। पर चाहते सभी सुख, शान्ति, आनन्द, खुशी एवं शक्ति ही हैं। यह दूसरी बात है कि इन्हें पाने के लिये गलत तरीके अपनाये जा रहे हैं और परिणामस्वरूप "ज्यों-ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता गया" वाली लोकोत्ति चरित्रार्थ हो रही है।

एक कहावत है ''ज्ञान बिना सद्गति नहीं'' अर्थात् अच्छी जिन्दगी जीना चाहते हो तो ज्ञान सुनना होगा, समझना होगा, उस पर अमल करना होगा और उन संस्कारों का निर्माण करना होगा जिनसे दुःख में भी सुख का, तनाव में भी शान्ति का, हानि में भी लाभ का अहसास होता रहे। असली ज्ञान की परख यही है कि कुछ भी हो जाये, समस्याओं का पहाड़ भी क्यों न टूट पड़े ,ज्ञानी के मुख से उफ न निकले, न उसके चेहरे पर जरा-सी भी शिकन आये। सुख में तो सभी ठीक ही रहते हैं लेकिन यदि कोई संकट सिर पर आ जाये और फिर भी कोई मुस्कराता रहे तो यही जादूई चमत्कार श्रेष्ठ ज्ञान का प्रतिफल है।

– क्रमशः

शीलम् परम भूषणम्

–ब्रह्माकुमार विनोद, आबू पर्वत

शील वह अमृत है जो मनुष्य को तेजस्वी, स्थिरचित्त, बुद्धिमान एवं सत्कर्मी बनाता है और सद्‌वृत्तियों को अभिप्रेरित कर सुख-शांति व समृद्धि प्रदान करता है। साथ ही यह ऐसा प्रदीप्त दीपक है जो घोर तमस से दिव्य प्रकाश की ओर ले जाता है एवं दिव्यता से निखार कर नर से नारायण बना देता है। शील अर्थात् उत्तम चरित्र सर्वोच्च बल है। शीलवान से पवित्रता, सहृदयता, उदारता और सहिष्णुता सतत् प्रवाहित होती रहती हैं। जिस प्रकार फूलों के बाग से सुगंध, शीतलता, रमणीकता और सुंदरता सदैव मिलती है, कुछ इसी तरह शीलवान की सद्‌वृत्तियों से स्नेह, माधुर्य और परोपकार का सौरभ प्रतिपल बिखरता रहता है।

व्यवहारिक रूप से कुशल और आदर्श जीवन हेतु शील का बड़ा महत्त्व है। दैनिक जीवन में समभाव, शुभभावना, जीओ और जीने दो सहित विश्वकल्याण की भावना रखना ही शील की साधना का सच्चा स्वरूप है जिसकी उत्पत्ति सत्य-अहिंसा, प्रेम तथा बंधुत्वभाव की पृष्ठभूमि पर होती है। प्राय: सभी धर्मों में शील को जीवन की नींव माना गया है। बौद्ध धर्म में तो पंचशील एवं अष्टशील पालनीय हैं। महर्षि पतंजलि ने भी यम, नियम के अंतर्गत शील की व्याख्या दी है और इसे जीवन का आधार स्तम्भ बताया है। यदि कोई व्यक्ति किसी विशेषता से सम्पन्न है या मानवीय मूल्यों का संरक्षक एवं प्रवर्तक है तो उसे विवेकशील, धर्मशील, क्षमाशील आदि विशेषणों से अलंकृत किया जाता है। अत: शील से ही जीवन में शक्ति और स्फूर्ति है, शील के बिना तो जीवन अस्तित्व विहीन ही है।

शील मानव का सर्वोच्च सौंदर्य है। शील से वह संसार का संपूर्ण ऐश्वर्य हासिल कर सकता है। तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर सकता है, शीलवान के लिए कुछ भी असाध्य नहीं है। शास्त्रों में वर्णन है कि शील के बल से मान्धाता ने एक दिन में, जनमेजय ने तीन दिन में और नाभाग ने सात दिनों में ही इस पृथ्वी पर राज्य प्राप्त किया। शील के संदर्भ में महाभारत में भी उल्लेख है कि पांडव शीलवान थे। उनके पास सर्व धन, सम्पदा उपलब्ध थे जिन्हें देख दुर्योधन प्राय: चिंतित रहता था। धृतराष्ट्र ने पुत्र से कहा कि युधिष्ठिर जैसी सम्पत्ति या उससे भी बढ़कर राजलक्ष्मी को यदि तुम प्राप्त करना चाहते हो तो शीलवान बनो और फिर दैत्यराज प्रह्लाद की कहानी सुनाते हुए दुर्योधन को बताया कि इस दैत्यराज ने शील का आश्रय लेकर ही इंद्र का राज्य हर लिया और तीनों लोकों को अपने वश में कर लिया। इंद्र ने ब्राह्मण का रूप धारण कर दैत्यराज की सेवा सुश्रुषा की और कुछ दिनों बाद उनसे पूछा – ''राजन्, आपको त्रिलोक का उत्तम राज्य कैसे प्राप्त हुआ ? कृपया मुझे बताइये।''

दैत्यराज – मैं राजा हूँ, इस अभिमान में आकर कभी किसी की ग्लानि नहीं करता। संयमपूर्वक रहता हूँ। क्रोध को जीतकर मन और इंद्रियों को काबू में रखता हूँ। मैं तुम्हारे द्वारा की गई सेवा से बहुत प्रसन्न हूँ, तुम्हारा कल्याण हो, तुम कोई वर मांगो, मैं दूंगा।

ब्राह्मण – राजन्! यदि आप प्रसन्न हैं और मुझे प्रसन्न करना चाहते हैं तो मुझे आपसे शील प्राप्त करने की इच्छा है, यही मेरा वर है।

दैत्यराज ने एवमस्तु कहकर वर तो दे दिया लेकिन बहुत दुखी हो गये क्योंकि शरीर से कांतिमान छाया मूर्तिमान होकर प्रकट हुई और बोली – मैं शील हूँ, तुमने मुझे त्याग दिया इसलिए मैं जा रही हूँ और उस ब्राह्मण के शरीर में निवास करूंगी, जो अब तक तुम्हारी सेवा कर रहा था। तत्पश्चात् एक और तेजोमय प्रकाश रूपधारी प्रकट हुआ, वह धर्म था।

उसने कहा कि शील जहां होता है वहीं मैं भी रहता हूँ। फिर तीसरा तेजोमय पुरुष सत्य भी धर्म के पीछे चला गया। फिर महातेजस्वी सदाचार निकला और सत्य के पीछे चल पड़ा। इसके बाद क्रमश: बल और लक्ष्मी भी दैत्यराज को छोड़कर ब्राह्मण में प्रवेश कर गए। शील के महत्त्व को दर्शाने वाली यह कहानी सुनकर दुर्योधन के बौद्धिक कपाट तो नहीं खुले परंतु हमें दुर्योधन का अनुकरण नहीं करना है और शील अर्थात् पवित्रता को अपना सर्वश्रेष्ठ आभूषण बनाकर रखना है।

शील मानव की सर्वोच्च सम्पदा है। इसकी उपस्थिति मात्र से ही सर्व खजाने एवं सुख-सुविधा प्राप्त होते हैं। शीलवान अर्थात् चरित्रवान बनने हेतु आत्मचिंतन, वैचारिक शुद्धिकरण, ब्रह्मचर्य व दिव्यगुणों की धारणा अनिवार्य है। आज व्यवहारिक धरातल पर नकारात्मक दुष्प्रवृत्तियों का वर्चस्व है। चहुँ ओर दु:ख-अशान्ति है फिर भी आत्मिक भाव, सकारात्मक दृष्टिकोण द्वारा जीवन को सही दिशा दी जा सकती है। स्व-सशक्तिकरण कर जीवन को सद्गुणी बनाया जा सकता है। आन्तरिक परिवर्तन ही जीवन का दिव्यीकरण है। कुछ लोग प्राय: तर्क देते हैं कि सकारात्मक एवं नकारात्मक संकल्प स्वाभाविक हैं लेकिन ऐसा नहीं है। मन को जिस ओर केन्द्रित करते हैं विचार और कर्म वैसे ही हो जाते हैं। इसलिए तो कहते हैं, जैसा सोचेंगे, वैसा बनेंगे। यदि मन में दुर्भावनाओं का तूफान है तो जीवन में सुख-शान्ति कदापि नहीं हो सकती। मन के शुद्धिकरण के लिए राजयोग का अभ्यास सर्वोत्तम है। यह सरल और यथार्थ प्रक्रिया है जो आत्मिक वृत्ति को जागृत कर नकारात्मक वृत्तियों को नष्ट कर देती है और सद्वृत्ति को पोषित कर आत्मा को दिव्यता प्रदान कर संपूर्ण सच्चरित्रवान अर्थात् शीलवान बना देती है। तो आइये, राजयोगी बनें और सच्चरित्र बनें। ❐❐

योग के लिए स्थिरमति.......पृष्ठ 01 का शेष

हैं। उन्हें या तो यह ज्ञान नहीं कि शरीर तो पाँच तत्वों का पुतला है और इसके किसी भाग पर मन को एकाग्र करना वास्तव में 'योग' नहीं क्योंकि योग तो परमात्मा से होना चाहिए। यदि उन्हें यह ज्ञान है तो फिर इस प्रकार के अभ्यास में मन और बुद्धि की एकता नहीं हो सकती। अन्य कुछ लोग मोमबत्ती जगाकर उसकी लौ पर त्राटक करते या मन को एकाग्र करते हैं। परन्तु वास्तव में तो यह भी प्रकृति ही का प्रकाश है; मन को तो ज्योतिस्वरूप, शोक-रहित परमात्मा पर एकाग्र करना चाहिए जो कि हमारे परमपिता हैं। इसी प्रकार, अन्य कुछ लोग अपनी भृकुटी में मन एकाग्र करते हैं। भृकुटी में निवास करने वाली आत्मा के स्वरूप में स्थित होना ही योग है। योगाभ्यासी को तो इस सत्यता का मनन करना चाहिए कि मैं भृकुटी में रहने वाली एक ज्योतिबिन्दु आत्मा हूँ। अत: एक बार फिर स्पष्ट करते हुए संक्षेप में हम कह सकते हैं कि यह संसार एक सागर के समान है जिसमें हर्ष-शोक, हानि-लाभ, निन्दा-स्तुति की लहरें उठती रहती हैं। योगाभ्यासी कछुए की तरह स्वयं को कर्मेन्द्रियों से न्यारा करके, मन रूप चक्षु से परमधाम के वासी ज्योतिबिन्दु परमात्मा शिव को देखता है और उन्हीं के स्वरूप में मन को समाहित करता है। ❋❋

कर्म परछाई की तरह मनुष्य के साथ रहते हैं इसलिए श्रेष्ठ कर्मों की शीतल छाया में रहो।

घूँघट के पट खोल

–ब्रह्माकुमारी विजय, बीकानेर

विपरीत परिस्थितियों से भरे इस संसार में मनुष्य सुख-शांति-आनन्द और सच्चे नि:स्वार्थ प्रेम की खोज कर रहा है। कई बार मानव की यह गलत धारणा बन जाती है कि व्यक्ति व स्थान बदलने से परिस्थिति बदल जायेगी। स्थान या व्यक्ति से किनारा करने से वृत्ति या प्रवृत्ति नहीं बदल सकती। मानव अनभिज्ञ होने के कारण स्वयं को दोषी नहीं समझता। इसलिए विपरीत परिस्थितियां बढ़ती जा रही हैं। कर्मक्षेत्र पर मनुष्य कर्म करता है तो उसकी अन्तरात्मा मूल रूप में शुद्ध होने के कारण श्रेष्ठ कर्म करने की आवाज़ देती है परंतु सांसारिक इच्छाओं व वासनाओं के वशीभूत होने के कारण उसको वह शुद्ध आवाज़ सुनाई नहीं देती है। स्पष्टीकरण के लिए प्रस्तुत है एक घटना – एक सज्जन अपने कमरे में बैठे थे। दीवार पर घड़ी लगी थी और लगातार चलती हुई टकटक की आवाज कर रही थी। वे सज्जन इस आवाज़ को सुन रहे थे। थोड़ी देर में बाहर गली में ऊँची ध्वनि से बाजे बजने लगे और घड़ी की आवाज आनी बंद हो गई। भयभीत होकर उसने नौकर को बुलाकर कहा – ''देखो, यह घड़ी चलनी बंद हो गई है। इसकी ध्वनि सुनाई नहीं पड़ती।''

नौकर ने ध्यान से घड़ी को देखा, वास्तविक बात को समझकर वह बोला – ''घड़ी बंद नहीं हुई है लेकिन बाहर की ध्वनि इतनी अधिक है कि इसकी आवाज़ सुनाई नहीं देती।'' मनुष्य का शरीर एक कमरा है। इसके अंदर आत्मा कुछ श्रेष्ठ कर्म करने की लगातार आवाज़ देती है परंतु देह-अभिमानी होने के कारण उसकी आवाज को या तो इंसान सुनता नहीं या फिर आवाज़ को दबा देता है। आज भौतिकता संपन्न संसार में आकर्षण के इतने बाजे बज रहे हैं कि उनके कारण अन्तरात्मा की आवाज सुनाई ही नहीं देती। अंदर के पट तभी खुलें जब बाहर के पट बंद हो। तभी मनुष्य शुद्ध आत्मा की आवाज अनुसार श्रेष्ठ कर्म करता है और प्रियतम परमात्मा से प्रेम करता है। उस प्रेम के आधार से ही उनकी आज्ञा भी समझ में आती और उनकी आज्ञा ही श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ है। परमात्मा की श्रेष्ठ मत पर चलने से ही हम विकर्मों व विकल्पों से मुक्त हो सकते हैं और जीवन में स्थायी सुख-शान्ति की अनुभूति कर सकते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है कि जब तक देहभान रूपी घूंघट को हटाकर आत्म-दर्शन नहीं करते तो परमात्म-दर्शन अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति कदापि संभव नहीं है। परमात्म-प्राप्ति के बिना उनके खज़ानों का अधिकारी कैसे बन सकते हैं?

दया और दुआ........पृष्ठ 12 का शेष

चैनल्स वाले भी आए थे। हमें उन्हें वापस भेजना पड़ा क्योंकि सभी पीड़ित अपने को गुप्त रखना चाहते थे। विचारों की लेन-देन के बाद अल्पाहार हुआ। उन्हें राजयोग का अभ्यास भी करवाया गया। यह उनके लिये नया और अद्भुत अनुभव रहा। किसी-किसी ने अशरीरी अवस्था का सुन्दर अनुभव किया। जाते समय कइयों ने कैसेट्स लिए, स्थानीय सेवाकेन्द्रों का पता भी लिया। सारा समाज जिन्हें अज्ञानतावश अछूत समझता है उन्हें भगवान ही सुख दे सकता है, यह उन्होंने अनुभव किया। मुर्दा दिलों में जाने डाल देने वाली यह सेवा, जो बहुत भारी लग रही थी , बहुत सहज सफलता से सम्पन्न हुई। ईश्वरीय सेवा,समाज सेवा, रोगी सेवा, महिला और युवाओं की सेवायें–सब एक साथ करने का सात्विक आनन्द हमें मिला।

समय की नाजुकता को पहचानिए

–ब्रह्माकुमारी अनीता, गोपालगंज

हम सभी जानते हैं कि संसार में बढ़ती हुई हिंसा, अपराध, महंगाई और घटते हुए नैतिक मूल्यों, सिमटती हुई नि:स्वार्थ भावना तथा पारस्परिक घृणा के कारण सभी दु:खी और परेशान हैं परंतु फिर भी कहते हैं कि इसका असली कारण गरीबी है। परंतु क्या पेट में रोटी पड़ जाने के बाद मनुष्य की सभी समस्याओं का अंत हो जाता है? उसके सभी दु:ख समाप्त हो जाते हैं? आज का इंसान बाल-बच्चों से, आस-पड़ोस से, कोर्ट-कचहरी से और सबसे ज्यादा तो अपनी गलत सोच से दु:खी है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि दु:खों का कारण अशिक्षा है। यदि लोग पढ़-लिख लेंगे तो सभी अपराध खत्म हो जायेंगे। परंतु हम देखते हैं कि समाज में जितने भी अपराधिक मामले, घूसखोरी के, भ्रष्टाचार के या हड़प के होते हैं उन सबके पीछे पढ़े-लिखे लोगों का ही दिमाग काम कर रहा होता है। तो उन्हें सुख कहाँ? सुख की पहली निशानी तो यह है कि सच्चाई, ईमानदारी और कड़ी मेहनत से जो मिल जाए उसमें संतोष करना।

अन्य कई लोग सभी दु:खों का कारण बताएंगे कि सरकार ही गलत है, नेता सही नहीं हैं। पर देखिये, हर वो व्यक्ति जो अपने परिवार का पालक है, अपने दो-चार या आठ-दस सदस्यों वाले परिवार के लिए सरकार के समान ही तो है। लेकिन हम देखते हैं कि आज घर का ऐसा मुखिया भी परिवार की सही रूप में पालना नहीं कर पाता है, परिवार के अलग-अलग दिमाग वाले सदस्यों की मनमानी इच्छाओं की पूर्ति भी नहीं कर पाता है। इतना ही नहीं, उसको जो नहीं करना चाहिए वह भी वो कर लेता है। जो नहीं खाना चाहिये, वो खा लेता है। जो नहीं बोलना चाहिये वो बोल लेता है। तो जब वह आठ-दस लोगों की माँगें पूरी नहीं कर पाता तो फिर सरकार को क्यों दोषी ठहराता है। नेता भी तो इंसान हैं, जब हम ही ग़लत हैं तो हम दूसरों के सही होने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? जब हम अपने ही बाल-बच्चों को नहीं सुधार सकते तो एक नेता करोड़ों मनुष्यों वाले देश को कैसे सुधार सकता है? दु:ख, अशान्ति के माहौल, तंगी और अभावों के वातावरण या उसके खौफ से परेशान होकर ही तो लोग सरलता और सत्यता को मूर्खता की संज्ञा देकर येन-केन-प्रकारेण भौतिक संसाधनों को इकट्ठा करने में जुटे हुए हैं। जैसे एक स्वस्थ व्यक्ति के आहार में साग-सब्जियाँ, फल, दूध, अनाज आदि खाद्य पदार्थों को शामिल किया जाता है परंतु ये खाद्य-पदार्थ व्यक्ति के असली आहार नहीं हैं। असली आहार है उसके अंदर छिपा हुआ कार्बोहाइड्रेट, विटामिन्स, वसा इत्यादि। ये ही तत्व उसके तन को हृष्ट-पुष्ट बनाये रखते हैं। ठीक यही बात भौतिक संसाधनों पर भी लागू होती है। ये संसाधन मनुष्य की असली प्राप्ति नहीं हैं। असली प्राप्ति है मन की सच्ची शांति। तो क्या भौतिक-संसाधन हमें सुख की प्राप्ति करा रहे हैं जिसके लिए हम इतना सिकुड़ते और स्वार्थी होते जा रहे हैं।

आज के युग में जितने सुख के साधन लोगों के पास मौजूद हैं उतने बीते समय में नहीं थे। तो सुख-शांति बढ़ी या घटी है? बीमारियाँ खत्म हुईं या और ज़्यादा नई पनपी हैं? लोगों का आपसी प्रेम और एकता बढ़ी है या घटी है? ज्ञान-विज्ञान की तरक्की से प्रकृति मानव की दासी बनी है या उसे अपना दास बनाया है? यदि हम इन समस्याओं की पूरी गहराई में जाकर दु:खों के असली कारण को तलाशें तो पाएंगे कि असली कारण है तेजी से घटता हुआ मनुष्य का चरित्र। संसार में जितने भी व्यवसाय हैं चाहे वो डॉक्टरी हो, इंजीनियरिंग हो, वकालत हो या पुलिस विभाग, सभी अपने घटते हुए चरित्र के कारण ही बदनाम हैं और समाज को इन सभी के कारण भारी क्षति उठानी पड़ती है। चरित्र के जाने से सुख-

शांति-समृद्धि सबका नाश हो जाता है। तो फिर इस संसार को चरित्रवान कौन बनाएगा ? स्पष्ट-सी बात है कि किसी इंसान, नेता, अभिनेता या साधु-महात्मा से होने वाला यह काम है ही नहीं क्योंकि आज सभी के अंदर काम-क्रोध-लोभ-मोह-अंहकार का कीड़ा लगा हुआ है। संसार को स्वर्ग तो वही बना सकता है जो स्वयं इन विकारों से परे हो, जिसमें नि:स्वार्थ भावना हो, जो सबको एक नज़र से देखे, जो सबका कल्याण करने वाला हो, जिसके पास आत्मा, परमात्मा और सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का, सत्य-असत्य का, पाप-पुण्य का सच्चा ज्ञान हो और वो हैं स्वयं भगवान। **भगवान ही इस संसार को स्वर्ग बना सकते हैं। अत: स्वयं भगवान अपने कल्प पहले किये गये वायदे के अनुसार इस धरा पर आ चुके हैं और ज्ञान-योग की शक्ति से सारे संसार के लोगों को पावन बना रहे हैं।** भगवान ने ही यह रहस्य उद्घाटित किया है कि अब शीघ्र ही इस कलियुगी पतित दुनिया का महाविनाश होने वाला है और इसी धरती पर फिर से सतयुगी दुनिया की स्थापना होने वाली है।

आज हम अपनी आँखों से जो कुछ भी देख रहे हैं वो चाहे कितना भी सुंदर हो, बड़ा हो लेकिन है सब कुछ नाश हो जाने वाला। बाल-बच्चे, रिश्तेदार, ज़मीन-जायदाद मानव को सच्चा सुख नहीं दे सकते। व्यक्ति सारी उम्र लगाकर कितनी मेहनत से परिवार बसाता है, मकान बनाता है लेकिन जब वह इस संसार से जाता है तो एक छोटी-सी सूई भी उसके साथ नहीं जाती है। फिर हम क्यों इन सबके पीछे अपने अमूल्य श्वासों को बर्बाद कर रहे हैं? भगवान ने तो यहाँ तक बतलाया है कि सृष्टि के महापरिवर्तन के समय में कोई भी व्यक्ति किसी की भी मदद नहीं कर सकेगा।

विनाश काल की ही यादगार है महाभारत की लड़ाई। अभी ही सारा संसार कुरुक्षेत्र का मैदान बना हुआ है। जहाँ धर्म और अधर्म के अस्तित्व के बीच लड़ाई ठनी हुई है। मनुष्य के जीवन में बढ़ता हुआ तनाव और उसकी मानसिक खिन्नता एक ऐसे विस्फोट को जन्म देगी जो तृतीय विश्व-युद्ध के रूप में सारे संसार के सामने आयेगा। जहाँ आग्नेय शस्त्र या ब्रह्मास्त्र की जगह पर हाइड्रोजन बम और परमाणु बम तैयार हैं। तो सोचिये कि कितना भयंकर होगा यह महाविनाश! तो आइये, इससे पहले कि सब कुछ समाप्त हो जाये, हम भगवान के कार्य में अपना तन-मन-धन लगाकर सब सफल कर लें और लोक-परलोक सुहेला कर लें। तो उठिये, समय की नाजुकता को पहचानिये, धरती पर आये भगवान को पहचानिये और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा सिखाये जा रहे ज्ञान और योग-बल द्वारा देवता बनकर स्वर्णमयी दुनिया में चलिये।

❑❑

तीन शिष्य.............पृष्ठ 18 का शेष

बुद्धि बच्चे अपने सही दृष्टिकोण के कारण कलियुगी बाधाओं को सहज रीति से पार करते हुए स्वर्ग के अधिकारी बनते हैं। वे ना तो संसार से दूर भागते हैं और ना ही संसार में फंसते हैं बल्कि अपने दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाकर विपरीत परिस्थितियों को भी अनुकूल बना लेते हैं और इस कलियुगी सृष्टि को परिवर्तन कर स्वर्णिम दुनिया लाने में परमात्मा के मददगार बन जाते हैं। **आपको विचार करना है कि आप सर्वोच्च सद्गुरु परमात्मा के कौन से प्रकार के बच्चे हैं –विकारों से लहूलुहान होने वाले या घर गृहस्थ को त्यागकर, संसार को पीठ दिखाकर, जंगल में भागने वाले या फिर घर-परिवार में रहते हुए ,परमपिता परमात्मा की श्रीमत का पालन करते हुए निमित्त भाव धारण कर, विकारों को जीत कर, सकारात्मक दृष्टिकोण से जीवन को चलाने वाले?** ⁂

बलि प्रथा और प्राकृतिक आपदाएँ

–ब्रह्माकुमार रतनचंद 'रत्नेश' चण्डीगढ़

कुछ पर्वतीय भागों में बलि प्रथा अज्ञान, शिक्षा, जागरुकता में कमी और परंपरा को ढोये जाने की निशानी है। हालाँकि यहाँ बलि का क्रम अत्यन्त प्राचीन है पर कालांतर में जैसे-जैसे लोगों में जागरुकता आती गई है, कई स्थानों पर बकरे या दूसरे पशुओं को बलि देने की प्रथा का स्वतः ह्रास हुआ है। हर वर्ष शीत ऋतु में हिमाचल प्रदेश में असंख्य बकरों की बलि दी जाती है जिसे धार्मिक रीति-रिवाजों और उत्सवों से जोड़ा जाता है। लेकिन आज के संदर्भ में धार्मिक अनुष्ठानों के नाम पर बलि प्रथा को महिमामण्डित करना उचित नहीं है। सुर-असुर, यक्ष, नाग, गंधर्व, किन्नर आदि जातियों का प्रभाव हिमालय में पौराणिक काल से रहा है और मान्यता है कि हिमालयवासी उनकी ही संतानें हैं। उत्तर भारत के पर्वतीय अंचल को शिव और शक्ति की भूमि माना जाता है और शिव यहाँ कई नामों से पूजे जाते हैं। दुर्भाग्य से, अज्ञानतावश अधिकाँश लोग निराकार शिव और आकारी शंकर को एक ही मान लेते हैं। आदिम जातियों के साथ-साथ अन्य दूसरी जातियाँ भगवान शंकर और अन्य देवी-देवताओं को माँसाहारी मानते हैं तथा तदानुसार पूजा-अर्चना करते हैं जबकि यह पूर्णतः असत्य है। मत्स्य पुराण की एक कथा के अनुसार यक्षों के राजा पूर्णभद्र ने अपने शिव भक्त पुत्र हरिकेश को इसलिए शंकर की आराधना से मना किया था कि उसकी जाति के लोग माँस खाते थे। पर्वतीय लोक गीतों तथा लोक कथाओं में भी शंकर के माँसाहारी रूप का वर्णन किया गया है। इन्हीं ग़लत धारणाओं के चलते आसुरी देवी-देवताओं यथा हिडिम्बा, वाणासुर, भस्मासुर, तारकासुर आदि को पशु बलि देकर प्रसन्न किया जाता है। पशु बलि देने पर ये देवता पशुओं, खेतों आदि की रक्षा करते हैं, ऐसा भ्रम है। जागरुकता के कारण अब स्थान-स्थान पर यह सर्व सम्मति से बंद की जा रही है। अब तो वैज्ञानिक शोधों से भी यह पुष्टि हो चुकी है कि बड़ी संख्या में पशुओं की हत्या के कारण ही भूकम्प और बादल फटने जैसी आपदाएँ होती हैं। कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली विश्वविद्यालय के भौतिकी और नक्षत्र भौतिकी विद्वानों डॉ. एम.एस. बजाज, डॉ. एम.एस.एम. इब्राहिम और डॉ. विजयराज सिंह ने भूकम्प, समुद्री तूफान तथा चक्रवात आदि के कारणों के अनुसंधान में, कई तकनीकी शोध-पत्र देश-विदेश में प्रकाशित किये थे। उनका मानना है कि भारी संख्या में पशुओं की हत्या से समग्रता का विखण्डन (ब्रेक डाउन ऑफ इण्टिग्रेटेड सिस्टम) होता है जो प्राकृतिक आपदाओं का कारण बनती है। शोधानुसार पशु-पक्षियों के वध से आइंस्टाइन पीड़ा तरंग में बढ़ोतरी होती है जो इन आपदाओं का कारण है। दूसरे कारण युद्ध और मानव हत्याएँ हैं। आइन्स्टाइन तरंग के साथ-साथ करुणा तरंगें भी बनती हैं, जो हत्याओं की तुलना में बहुत कम हैं। जानवरों और समुद्री प्राणियों को मारने से प्राणघातक बीमारियाँ भी फैलती हैं, इस बात की पुष्टि विदेशी वैज्ञानिक भी कर चुके हैं। इन वैज्ञानिकों ने यह भी प्रमाणित किया है कि हृदय रोग और कैंसर का कारण भी अधिक मात्रा में माँस और मछली का भक्षण है और चिकित्सा विज्ञान भी माँस भक्षण का विरोध करता है। अनुसंधानकर्त्ताओं का मानना है कि यदि देश में शाकाहारियों की संख्या अधिक हो तो स्वास्थ्य सम्बन्धी बजट 70 प्रतिशत तक बचाया जा सकता है। यह भी सिद्ध हुआ है कि लगभग ८०० बीमारियाँ माँस खाने से होती हैं। आइन्स्टाइन पीड़ा की व्याख्या में अनुसंधानकर्त्ता कहते हैं कि यह पीड़ा कई तरह की होती हैं जैसे कैंसर, पेट-कान-दाँत और पीठ का दर्द, प्रसव-वेदना इत्यादि। पशु इन पीड़ाओं का अनुभव वध के दौरान करते हैं। *(शोधपूर्ण टिप्पणी 'ईस्ट एण्ड वेस्ट' नामक एक अंग्रेजी आध्यात्मिक पत्रिका से उद्धृत है)*।

1. पातड़ां- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करती हुईं राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा जी, ब्र.कु. भाग्य बहन तथा अन्य । **2. नारायणगढ़-** विधायक भ्राता रामकिशन को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सुलोचना बहन । **3. अमृतसर-** बिशप भ्राता प्रदीप सामन्तराय को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. राज बहन तथा ब्र.कु. आदर्श बहन । **4. जालंधर-** विश्व हृदय दिवस के उपलक्ष्य में पहल संस्था द्वारा आयोजित सेमीनार में ईश्वरीय संदेश देने के बाद ब्र.कु. सीमा बहन, भ्राता लखबीर सिंह जी से मोमेण्टो स्वीकार करते हुए । **5. नारनौंद (हांसी)-** नगरपालिका पार्षद बहन सुमित्रा सोनी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. कमलेश बहन, ममता बहन, किरण बहन । **6. जंडियाला गुरु-** मन्दिर प्रधान तथा एस.एच.ओ. को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. बहन । **7. साम्बा (जम्मू कश्मीर)-** भ्राता ओमप्रकाश मुंशी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. रानी बहन । **8. फर्रुखाबाद (ओम निवास)-** उपज़िलाधिकारी भ्राता समीर वर्मा को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. माधुरी बहन । **9. बनूड़ (चण्डीगढ़)-** नहर विभाग के भ्राता वेद प्रकाश जिलेदार तथा पंजाब महिला प्रभाग प्रधान बहन सुनीता जी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. सविता बहन । **10. ग्रेटर नोएडा-** ज़िला पंचायत अध्यक्ष भ्राता वीरेन्द्र ढाडा को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. गीता बहन । **11. फिरोजपुर सिटी-** लादू की मण्डी में मन्दिर प्रधान सरपंच भ्राता कर्मचन्द को राधा-कृष्ण का फोटो देती हुईं ब्र.कु. तृप्ता बहन । **12. गिदड़बाहा-** पॉप गायक भ्राता बलकार सिद्धू को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. शीला बहन तथा ब्र.कु. रजनी बहन ।

1. ओ.आर.सी. (गुड़गाँव)- प्रगति समारोह का उद्‌घाटन करते हुए बाहरी मामलों के संयुक्त सचिव भ्राता मोलय मिश्र, बहन मोलय मिश्र, ब्र.कु. शुक्ला बहन, ब्र.कु. अनुसूईया बहन, डॉ. भ्राता रूप सिंह तथा अन्य । 2. देहली- जवाहरलाल नेहरु स्टेडियम में अर्जुन पुरस्कार प्राप्त भ्राता भीमसिंह एवं अर्जुन पुरस्कार प्राप्त भ्राता गोपीचन्द तथा ओलम्पियन गिर्राज सिंह को ईश्वरीय संदेश देने के बाद ब्र.कु. ज्योति भाई उनके साथ । 3. बापौली (पानीपत)- स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए विधायक भ्राता भरत सिंह छौकर । ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन तथा ब्र.कु. भारत भूषण भाई भी मंच पर हैं । 4. फरीदाबाद (3ए-16)- उपायुक्त अनुपमा बहन को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. कौशल्या बहन । साथ में हैं भ्राता हरिचन्द्र, भ्राता किशनलाल, पवित्रता बहन तथा सीता बहन । 5. सिरसा (सद्‌भावना भवन)- युवाओं में सकारात्मक परिवर्तन कार्यक्रम मे मशाल प्रज्वलित करते हुए नेहरु युवा केन्द्र के अध्यक्ष भ्राता नरेन्द्र यादव, उपाध्यक्ष भ्राता अनिल जैन, ब्र.कु. उर्मिला बहन, ब्र.कु. कृष्णा बहन, भ्राता राजेन्द्र बाहिया तथा ब्र.कु. भजन भाई । 6. लखनऊ (इन्दिरा नगर)- आध्यात्मिक कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं ब्र.कु. शीलू बहन तथा ब्र.कु. स्मिता बहन, ध्यानपूर्वक सुनते श्रोतागण । 7. फिरोजपुर कैण्ट- टेलिकॉम के महाप्रबन्धक भ्राता डी.पी.गुप्ता को ईश्वरीय संदेश देती हुईं ब्र.कु. ऊषा बहन । 8. नरवाना- इफको के सहकारी कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कार्यक्रम में ईश्वरीय संदेश देती हुईं ब्र.कु. सुषमा बहन ।

1. **बड़ौत**- मूल्यनिष्ठ समाज कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सर्राफ बाज़ार प्रधान भ्राता सुखपाल चन्द जैन । साथ में ब्र.कु. मोहिनी बहन तथा अन्य । 2. **देहली (मण्डावली)**- मूल्यनिष्ठ समाज कार्यक्रम के उद्घाटन के पश्चात् ब्रिगेडियर भ्राता एस.के.अरोड़ा, ब्र.कु. दादी कमलमणि जी, ब्र.कु. सुनीता बहन तथा अन्य समूह चित्र में । 3. **शिकोहाबाद**- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बी.डी.एम.कालेज के पूर्व प्रवक्ता भ्राता आर.एस.पाल, प्रो.बी.एन. सिंह, प्रवक्ता कुसुम बहन, ब्र.कु. आशा बहन तथा ब्र.कु. गीता बहन । 4. **बाँदा**- राजयोग शिविर का उद्घाटन करते हुए कालेज प्राचार्या बहन एम.सिद्दकी, ब्र.कु. गीता बहन तथा अन्य शिक्षिकाएँ । 5. **नयागंज (कानपुर)**- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं ब्र.कु. सुमित्रा बहन, प्राचार्या बहन अमृता पंत, भ्राता सुशील कानोडिया, ब्र.कु. विजय भाई तथा अन्य । 6. **फरह (मथुरा)**- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए सांसद भ्राता कलराज मिश्र । ब्र.कु. विजय, ब्र.कु. जयवीर, ब्र.कु. श्याम सुन्दर तथा अन्य भी साथ में हैं । 7. **बलिया (कदम चौराहा)**- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ग्राम प्रधान भ्राता नन्द जी यादव, ग्राम प्रधान भ्राता अनिल तिवारी, ग्राम प्रधान भ्राता रामजी वर्मा, ब्र.कु. सुमन बहन तथा अन्य । 8. **बरेली**- आध्यात्मिक कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में, के.सी.गुप्ता जी, भ्राता शिवशंकर, ब्र.कु. पार्वती बहन तथा अन्य।

1. बाराबंकी (लखनऊ)- सत्यम-शिवम्-सुन्दरम् जागृति अभियान को हरी झण्डी देती हुईं ब्र.कु. सती दादी । साथ में अन्य भाई-बहनें । **2. देहली (चाणक्य पैलेस)**- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बीकानेर रेस्टोरैण्ट के भ्राता राजेश अग्रवाल तथा रूपश्री ज्वैलर्स के भ्राता नवीन गर्ग, साथ में ब्र.कु. उमेद प्रकाश, ब्र.कु. बृन्द्रा बहन । **3. सुनाम**- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डॉ. भ्राता सिंगला जी, बहन परमेश्वरी देवी, ब्र.कु. मीरा बहन तथा अन्य । **4. फरीदाबाद**- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए इण्डियन फिलॉसाफीकल रिसर्च के सेक्रेटरी, नेहरु कालेज की फिलासॉफी विभागाध्यक्षा बहन आलोक सक्सैना, ब्र.कु. सरोज बहन, ब्र.कु. ऊषा बहन तथा अन्य । **5. बरनाला**- सर्व शिक्षा अभियान में सकारात्मक जीवन शैली विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. लेखराम शर्मा । **6. कोटकपूरा**- मूल्यनिष्ठ समाज संकल्प-पत्र भरते हुए स्थानीय काँग्रेस अध्यक्ष भ्राता महाशयजी, एम.सी.भ्राता कमलजीत भुल्लर । साथ में हैं ब्र.कु. प्रेम बहन तथा अन्य । **7. रोहतक**- नशा मुक्ति केन्द्र में ईश्वरीय संदेश देती हुईं ब्र.कु. रक्षा बहन । साथ में हैं सलाहकार भ्राता देवेन्द्र सिंह । **8. सराहाँ (हि.प्र.)**- ए.डी.एम. भ्राता एस.पी. रोलटा तथा अन्य को ईश्वरीय संदेश देती हुईं ब्र.कु. परिमा बहन ।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन – 307510,
आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया । सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : bkatamad1@sancharnet.in Ph. No. (02974)- 228125 theworldrenewal@yahoo.co.in

1. आबू रोड (शान्तिवन)- सर्वोगीण जीवन-शैली द्वारा सम्पूर्ण सफलता विषयक महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के भूगर्भ जल एवं सिंचाई मंत्री भ्राता साँवरमल जाट, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई तथा अन्य । **2. बड़ौदा (मंगलवाड़ी)**- आध्यात्मिक झाँकी का उद्घाटन करते हुए गुजरात के शिक्षा मंत्री भूपेन्द्र भाई लाखावाला जी । साथ में ब्र.कु. बहनें तथा अन्य । **3. सिरसा**- हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता भूपेन्द्र सिंह हुड्डा को ईश्वरीय संदेश तथा ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. उर्मिला बहन तथा ब्र.कु. बिन्दू बहन । साथ में कमिश्नर भ्राता राजरूप फुलिया जी । **4. छतरपुर**- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पूर्व मंत्री भ्राता मानवेन्द्र सिंह, समाज सेवी भ्राता नारायण दास अग्रवाल, ब्र.कु. महेन्द्र भाई, ब्र.कु. अवधेश बहन, नगरपालिकाध्यक्ष भ्राता प्यारा सिंह तथा अन्य । **5. खातीगुडा (उड़ीसा)**- उड़ीसा के उप-वाचस्पति भ्राता प्रह्लाद डोरा का स्वागत करती हुईं ब्र.कु. नीलम बहन तथा ब्र.कु. सूर्यकान्ति बहन । **6. मुम्बई (कोलाबा)**- महाराष्ट्र के मंत्री भ्राता बसंत धावखरे को ईश्वरीय संदेश देती हुईं ब्र.कु. गायत्री बहन तथा मोहिनी बहन । **7. भुवनेश्वर (सी.एस.पुर)**- उड़ीसा के कानून, उद्योग तथा ग्राम विकास मंत्री भ्राता विश्वभूषण हरिचन्दन जी, ब्र.कु. दमयन्ती बहन से ईश्वरीय सौगात ग्रहण करते हुए । **8. मद्रास**- इण्डियन होलिस्टिक मेडिकल अकादमी द्वारा मैगनेट थेरेपी क्षेत्र में बहुमूल्य मानव सेवा के लिए ग्लोबल हॉस्पिटल के डॉ. रमेश धर्मठोक जी को स्टार ऑफ एक्सलेंस तथा गोल्ड मैडल देकर सम्मानित करते हुए मद्रास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. भ्राता एस.पी. त्यागराजन जी । **9. अहमदाबाद**- ब्र.कु. डॉ. हरीश शुक्ल को हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के अध्यक्ष डॉ. जोटवानी जी सम्मान-पत्र तथा मानद उपाधि साहित्य वरिद्धि का मोमेण्टो देते हुए । **10. श्रीगंगानगर**- दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री भ्राता साहिब सिंह वर्मा, ज़िला प्रमुख चौ. भ्राता पृथ्वीराज भील, डॉ. भ्राता रविकान्त गोयल को नशा मुक्ति पोस्टर भेंट करती हुईं ब्र.कु. मोहिनी बहन ।

Regd. No. 10563/65 Postal Regd. No. RJ/WR/25/12/2003-2005, Posted at Shantivan, 307510 (Abu Road) on 5-7th of the month
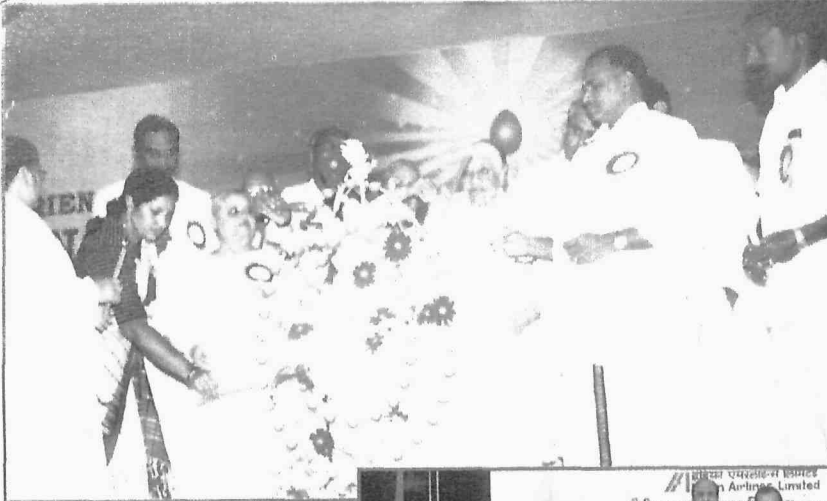
हैदराबाद (शान्ति सरोवर)- शान्ति सरोवर परिसर की प्रथम वर्षगाँठ पर आयोजित समारोह का उद्घाटन करते हुए आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. भ्राता वाई.एस.राजशेखर रेड्डी जी, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, ब्र.कु. मुन्नी बहन, ब्र.कु. भ्राता रमेश शाह जी, ब्र.कु. मोहिनी बहन तथा अन्य।

हैदराबाद- ट्रेनिंग कॉलेज ऑफ इण्डियन एयर लाइंस में स्व-सशक्तिकरण विषय पर व्याख्यान देने के पश्चात् ब्र.कु. डॉ. प्रेम मंसद भाई जी, कैप्टन सी.जी. भूपाल, प्रबन्ध निदेशक, ब्र.कु. शान्ति बहन, ब्र.कु. संगीता बहन तथा अन्य समूह चित्र में।
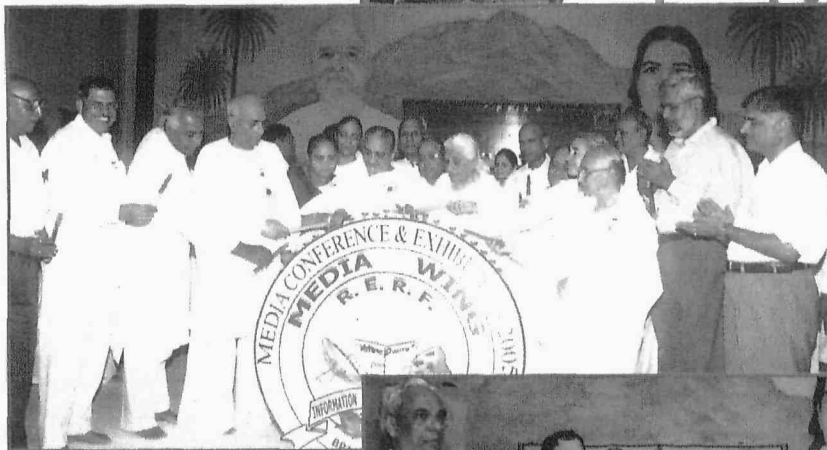
आबू रोड (शान्तिवन)- राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन एवं प्रदर्शनी 2005 का उद्घाटन करते हुए भ्राता एस.वी. कपिल, निदेशक, ऑल इण्डिया रेडियो, देहली, न्यू इण्डियन एक्सप्रेस के संयुक्त सम्पादक भ्राता माधवन कुट्टी, देवीलाल विश्वविद्यालय के उपकुलपति भ्राता राजरूप फुलिया, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई तथा अन्य।

आबू रोड (शान्तिवन)- वैल्यूज़ इन हैल्थ केयर एण्ड राजयोग रिट्रीट विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह, ब्र.कु. डॉ. निरंजना बहन, ब्र.कु. डॉ. भ्राता प्रेम मसंद, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु. शशि बहन, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. रूपा बहन, डॉ. भ्राता रामबाबू हरित, डॉ. भ्राता बी.एन. श्रीखण्डे, डॉ. भ्राता अशोक मेहता जी तथा अन्य।